संस्थापित १८६७ ई.

आर्य मित्र साप्ताहिक

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुख पत्र

आजीवन शुल्क ₹ २,५००
वार्षिक शुल्क ₹ २००
(विदेश ५० डालर वार्षिक) एक प्रति ₹ ५.००

● वर्ष : १२६ ● : संयुक्तांक ३१ व ३२ ● ०१ व ०८ अगस्त २०२४ (गुरुवार) श्रवण शुक्लपक्ष चतुर्थी सम्वत् २०८१ ● दयानन्दाब्द २०० वेद व मानव सृष्टि सम्वत्: १६६०८५३१२५

उत्तर प्रदेश के समस्त आर्य श्री राम भद्राचार्य के कथन की निन्दा व भर्त्सना करते हैं।

-देवेन्द्रपाल वर्मा

आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. के प्रधान श्री देवेन्द्रपाल वर्मा जी ने आर्य समाज जागृति विहार मेरठ के ३५वें स्थापना दिवस समारोह के शुभ अवसर पर दिनांक २८ जुलाई, २०२४ को मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित आर्यजनों को सम्बोधित करते हुए कहा कि ''तुलसी पीठ सेवा न्यास चित्रकूट (म.प्र.) के आचार्य स्वामी रामभद्राचार्य ने विगत २० जुलाई, २०२४ को एक समारोह में युग पुरूष महर्षि दयानन्द सरस्वती पर मिथ्या व अनर्गल आरोप लगाकर कहा कि महर्षि ने रामायण व महाभारत को कल्पित माना है। इतना ही नहीं महर्षि पाणिनी के सूत्रों में रामकथा एवं वेद मंत्रों में रामकथा के बीज दिखाने का झूठा दम्भ भरा है।''

श्रीराम भद्राचार्य के इस असत्य कथन की उ.प्र. के समस्त आर्य जन निन्दा व भर्त्सना करते हैं तथा वेदों में रामकथा कथा सिद्ध करने के लिए शास्त्रार्थ के लिए आमंत्रित करते हैं। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने अपने कालजयी ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश की भूमिका में सत्य ही लिखा है कि ''मनुष्य की आत्मा सत्याऽसत्य का जानने वाला है तथापि अपने प्रयोजन की सिद्धि हठ, दुराग्रह और अविद्यादि दोषों से सत्य को छोड़ असत्य में झुक जाता है।''

महर्षि को एक साधारण मनुष्य के समझने व परखने के वश की बात नहीं। वह सिद्ध पुरुष, बाल ब्रह्मचारी, योगी, सन्यासी व दृढ़ ईश्वर विश्वासी थे। भारत में व्याप्त पाखंड, जड़ पूजा व पराधीनता से मुक्ति में उनका बहुमूल्य योगदान रहा है। सारे संसार में वेदों का प्रचार प्रसार करने का मुख्य उद्देश्य था। ''स्वराज्य'' शब्द का सर्व प्रथम उद्घोष महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने ही किया था।

आर्य समाज की स्थापना का महर्षि का मुख्य उद्देश्य समाज में व्याप्त पाखंड को समाप्त कर वैदिक परम्परा व नियमों को लागू करना था। आज आर्य समाज के संगठन को मजबूत कर, ऋषि के उद्देश्य व मिशन को सार्थक करना होगा। विधर्मी दिन प्रति दिन धन-बल-छल के द्वारा हिन्दुओं को जड़ से मिटाने के लिए चेष्टा कर रहे हैं। उनकी कुचालों का सामना केवल आर्य समाज ही कर सकता है। मैं समस्त आर्यों का आवाहन करता हूँ कि वह संगठित होकर महर्षि के मिशन में लग जावें। ईश्वर श्रीराम भद्राचार्य को सद्बुद्धि दे ताकि वह सत्याऽसत्य को जान कर वक्तव्य दें।

इसके अलावा स्वामी चन्द्रदेव व पंडित उमेश आर्य आदि के भी प्रवचन एवं भजन हुए। समारोह में सर्वश्री डॉ. वेदपाल परोपकारिणी सभा अजमेर, हरवीर सिंह सुमन (उप प्रधान) राजेश सेठी, डा. आर.पी. चौधरी, सुशील बंसल, सतपाल मेन्दीस्ता, रामपाल सिंह, राम सिंह जाखड़, कर्नल वी. एस. ढाका, सुशील त्यागी, वीरेन्द्र सिंह, सूरजपाल सिंह, रवीन्द्र सिंह आर्य, सोहन वीर सिंह, माता कैलाश सोनी आदि सहित जनपद मेरठ की सभी आर्य समाजों के प्रतिनिधियों की गरिमामई उपस्थिति थी। कार्यक्रम का संचालन आचार्य प्रमोद कुमार जी ने कुशलता पूर्वक किया।

चार वेद-चार वाक्य

-पं० देव नारायण भारद्वाज

ब्रह्म की विद्या 'ब्रह्म' अर्थात् वेद ही है। चार वेद ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद एवं अथर्ववेद इनमें चार विषय क्रमशः ज्ञान, कर्म, उपासना एवं विज्ञान हैं। यहां एक-एक वेद से एक-एक वाक्य प्रस्तुत किया जा रहा है-

१. मनुर्भव जनया दैव्यं जनम् (ऋग्वेद १०.५३.६)-ऋग्वेद तृण से लेकर परमब्रह्म तक का ज्ञान कराता है। उसके ज्ञान का मूलभूत सारतत्व यही है कि हे मनुष्य तू स्वयं सच्चा मनुष्य बन तथा दिव्य गुणयुक्त सन्तानों को जन्म दे अर्थात् सुयोग्य मानवों के निर्माण में सतत प्रयत्नशील रह। मनुष्य, मनुष्य तभी बन सकता है, जब उसमें पशुताओं का प्रवेश न हो। आकार, रूप, रंग से कोई प्राणी मनुष्य दिखाई देता है, किन्तु उसके अन्दर भेड़िया, श्वान, उल्लू गृध्र आदि आकर अपना डेरा जमा लेते हैं। ऋग्वेद हमें वह सब ज्ञान प्रदान करता है, जिससे व्यक्ति एक प्रबुद्ध मानव रहता है, वह न पशु और न दानव बनने पाता है।

२. आयुर्यज्ञेन कल्पताम् (यजुर्वेद १८.२६)- तांबे का कोई भी तार प्रकाश नहीं कर सकता है, किन्तु जब उसमें विद्युत का प्रवाह होने लगता है तो उससे प्रकाश, गति, उर्जा ओर ध्वनि सभी प्राप्त होने लगते हैं। देखने में तार पहले जैसा ही लगता है। इसी प्रकार देखने में सभी मनुष्य एक से लगते हैं, किन्तु जिनमें यज्ञरूपी विद्युत का प्रवाह हो जाता है, वही दिव्य हो जाते हैं। पंच महायज्ञ की बात तो पृथक ही है। सामान्यतया यज्ञ से तीन कर्मों का बोध प्राप्त होता है-देवपूजा, संगतिकरण और दान। सभी सच्चे जड़-चेतन देवताओं के प्रति पूजा-भाव रखते हुए समाज में समन्वय-संगति बनाये रखने के लिए सर्वसुलभ संपदाओं को सुविधानुसार दान करना और कराना, यही सब कार्य यज्ञ कहलाते हैं। यही कर्म मनुष्य को महामानव बना देते हैं। आहार, निद्रा, भय व मैथुन तो हर पशु तथा मानव की आवश्यकता है। पशु केवल इन्हीं के लिए जीता है। किन्तु मनुष्य इनसे ऊपर उठता है। इनको भी धर्म के कर्म अर्थात् यज्ञ का रूप प्रदान करता हुआ जीता भी है और बलिदान भी हो जाता है। अगर हमने किसी को प्रेम नहीं दिया, किसी की सेवा नहीं की, किसी की पीठ नहीं थपथपाई, किसी को सहारा नहीं दिया, किसी को सान्त्वना नहीं दी, तो हमारा जीवन व्यर्थ है, निरर्थक है, एक व्यथा है। अयोग्य हैं हम। केवल अपने लिए जी रहे हैं, यह तो पशु का जीवन है। यही पशु प्रवृत्ति है कि केवल अपना ही ध्यान रखे। वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे।

३. सदावृधः सखा (सामवेद १६६-६८२) - इस यज्ञ भावना, कामना एवं कर्मणा को हम सामवेद के इस उपासना परक मन्त्र से प्राप्त कर सकते हैं। हम सदैव उन व्यक्तियों को अपना मित्र बनायें, जो अपने क्षेत्र में बढे हुए हैं, वृद्ध हैं। उनकी सदसंगति से, उनके वचन व उनके अनुकरण से पढे-बेपढे सभी को सद्ज्ञान-सद्कर्म की प्रेरणा प्राप्त होती रहेगी। उनके समीप बने रहने से मानव में यज्ञ की विद्युत का प्रवाह संचार करता रहेगा, जो इस लोक में तो उपयोगी होगा ही, परलोक में भी 'सदावृधः' जो आदि से ही सर्व वृद्धिपूर्ण परमब्रह्मा है, उसका भी सखा बना देगा, समान ख्याति का अधिकारी बना देगा। बड़ों की समीपता व उनका सम्मान सदैव आयु, विद्या, यश एवं बल का स्त्रोत होता है। इससे कोई

क्रमशः.....३ पर

वेदामृतम्

दोषो आगाद् बृहद् गाय, धुमद् गामन्नाथर्वण।
स्तुहि देवं सवितारम् सांम ११७

देखो, घनघोर रात्रि आ गई है। काली तामसिक निशा ने द्यावापृथिवी को पूर्णतः आच्छादित कर लिया है। कहीं प्रकाश की किरण दिखाई नहीं दे रही। आत्मा अन्धकारावृत हो गया है, मन और इन्द्रियाँ भी अन्धकार से आच्छन्न हो गई हैं। इस निविड तमस् में कर्तव्य-पथ को देख पाना बड़ा ही कठिन है। ग्रसने के लिए दुर्गुण और दुष्कर्मों ने इधर-उधर घूमना आरम्भ कर दिया है। मुझ अकेले के ही जीवन में निशा नहीं व्यापी है, प्रत्युत सम्पूर्ण राष्ट्र ही तमोमयी गहरी निशा से ग्रस्त हो गया है। सात्त्विकता मुँह छिपाकर भाग खड़ी हुई है, सर्वत्र तमोगुण छा गया है। अवसर देखकर हिंसा, असत्य, अन्याय, अत्याचार आदि के हिंस्रजन्तु अपने पैने दाँत दिखा रहे हैं। काम, क्रोध, लोभ, मोह आदि राक्षस दल-बल सहित आक्रमण कर रहे हैं। कुटिलता के भयानक सर्प फन फैला रहे हैं। मानसिक पीड़ाओं के वृश्चिक डंक मार रहे हैं। क्रूरता के व्याघ्र दहाड़ रहे है। अविद्या, अस्मिता, राग, द्वेष आंदि के भेड़िये फाड़ डालने को तैयार खड़े हैं। यह तमस्विनी और अधिक लम्बी हो गई तो विनाश निश्चित है। अतः अब तो जैसे भी हो यह अन्धकार छंटना चाहिए और रश्मिमाली सविता देव को राष्ट्र-गगन में उदित होना चाहिए। अतः हे गायक ! तुम सूर्योदय का गान गाओ। ऐसी तान छेड़ो कि अदिव्यता का सम्पूर्ण तमोजाल लुप्त होकर दिव्यता के दमकते हुए आदित्य-मण्डल का आविर्भाव हो । हे गायक ! तुम 'आथर्वण' हो, अथर्वा की सन्तान हो, उस अविचल प्रभु के पुत्र या उस स्थितप्रज्ञ योगी के शिष्य हो जो गहरी-से-गहरी निशा में अपने विवेक को नहीं खोता। अतः अविवेक और मूढ़ता को त्यागकर अपने व्यक्तिगत जीवन में तथा राष्ट्रगत जीवन में सात्त्विकता का सूर्य उदित करो। यह सात्त्विकता या दिव्यता का सूर्योदय तभी होगा जब अपनी सात्त्विक दिव्य रश्मियों से झिलमिल करते हुए दिव्य प्रेरणा की किरणों के अजस स्रोत देदीप्यमान सविता परमेश्वर हृदयांतरिक्ष या राष्ट्रगगन के राज-सिहासन पर आकर बैठेंगे। अतः हे स्तोता ! हे साधक ! हे गायक! तुम उस महागान की सरगम गांओ, उस सविता प्रभु के स्तुतिगीत की लय उठाओ, जो तामसिकता की इस चतुर्दिव्यापिनी 'घनघोर रात्रि में उथल-पुथल मचाकर सात्त्विकता और पवित्रता की ज्योति का अविर्भाव कर दे। हे गायक! हे कवि ! गाओ, उज्ज्वल महागान गाओ।

साभार-वेदमंजरी

देवेन्द्रपाल वर्मा
प्रधान/संरक्षक

पंकज जायसवाल
मंत्री/सम्पादक

आर्य शिवशंकर वैश्य
प्रबन्ध सम्पादक

सम्पादकीय.....

श्रीमद्दयानन्द सरस्वती की प्रथम जन्म शताब्दी के शुभ अवसर पर फरवरी 1925 में

श्री पं. चमूपति जी का व्याख्यान

देवियो और भद पुरुषों !

मैं तो मथुरा नगरी में शिष्य रूप से आया था न कि इस वेदी पर खड़ा होकर व्याख्यान देने के लिए। मैं तो यह विचार मन में रखकर आया था कि अब गुरु की नगरी में चलता हूँ। वहां पद-पद पर शिक्षा ग्रहण करूंगा और उन शिक्षाओं को अपने जीवन का आधार बनाकर घरको लौटूंगा। परंतु अब यह कार्य सौंपा गया है कि इस वेदीपर खड़ा होऊँ। मैं लिखने का प्रयत्न कर अपने को उपदेशक नहीं बना सकता। मेरे हृदय का इस समय वही भाव है जो इधर उधर प्रचार करके अपने माता पिता के घर पर पहुंचने वाले व्यक्ति का होता है। मैं लाखों बार उपदेशक बनने का विचार करता हूँ परन्तु बन नहीं पाता। यह वही स्थान है जहां मैंने उपदेश ग्रहण किया और हमारे गुरु ने उपदेश दिया था। यह स्थान कृष्ण का समझा जाता है । जब यहां कंस राजा था तब यहां की प्रजा दुखी थी और प्रजा के कष्ट निवारणार्थ एक तंग कोठरी में कृष्ण ने जन्म लिया था। वे बृजपाल थे। लोगों के ऊपर होने वाले बलात्कारों और अत्याचारों को दूर करने के लिए उनका जन्म हुआ था। मुरली द्वारा स्वाधीनता के सन्देश की सुमधुर ध्वनि में गुंजायमान करने के लिए उनका जन्म हुआ था। वह ध्वनि कुरुक्षेत्र में गूंजी थी। उसने रुद्र रूप धारण किया और पापों का नाश किया। कृष्ण को ब्रजपाल कहा जाता है और इसलिए कहा जाता है कि उन्होंने मथुरा में जन्म लिया था। आज का समय इसलिए नहीं है कि कृष्ण पर कुछ विचार किया जाय क्यों कि यह पुराना स्वप्न हो गया और इसे कई प्रकार से लांछित किया चुका है। लोगों ने प्यार करते करते अपने प्यारे को प्यार के योग्य नहीं रक्खा ।

श्रीकृष्ण ने पहला जन्म लिया तो स्वामी दयानन्द ने दूसरा जन्म लिया और संसार में दूसरा जन्म असली जन्म है। कृष्ण ने अपनी माता के गर्भ से जन्म लिया तो स्वामी दयानन्द ने अपने गुरु से जन्म लिया। शास्त्र में लिखा है कि जब लड़का गुरुकुल में प्रवेश करता है तच आचार्य उस को उसी प्रकार लेता है, जिस प्रकार माता अपनी गोद में लेती है। यदि श्रीकृष्ण ने जेल में जन्म लिया तो स्वा. दयानन्द छोटी सी कोठरी में पैदा हुए। अन्धेरे से रोशनी का जन्म होता है। रात में से दिन का उदय होता है। उसी प्रकार तंग कोठरी से प्रकाश होता है। वेद में लिखा है कि आत्मशक्ति का जन्म आग की भट्टी में से होता है।

जब स्वामी जी पाठशाला में थे तब उन्हें झाड़ू देने का काम सौंपा गया था। उन्होंने गुरुकी कोठरी में झाड़ू दी और सँसार को शिक्षा दी कि वह भी झाड़ू दे। गुरु विरजानन्द समझते थे कि वही झाड़ू सँसार की कुरीतियों को बुहार देगी। यह वही स्थान है जहां ऋषि दयानन्द पानी भरकर लाते थे और गुरु को स्नान कराते थे। आज उनकी बहाई हुई यमुना में समस्त संसार स्नान करता हुआ दीख पड़ता है। आज हम को यह दिखाना है कि यह स्थान एक समुद्र है और लोग इसमें बड़े चले जाते हैं। कृष्ण ने अपना जीवन लीला में बिताया था। ऋषि दयानन्द ने अपना समय भट्टी में बिताया था ।

स्वामी दयानन्द के आने के पूर्व सब ऋषियों ने समझा था कि हमें काम नहीं करना है। स्वामी दयानन्द ने कहा कि वेद में लिखा है कि आत्मा कर्म करने लिए है और वह कर्म करते-करते जायगा। स्वामी दयानन्द के जीवन से यदि कोई शिक्षा मिलती है तो वह यह है कि आत्मा कर्म करते-करते जाता है। स्वामी दयानन्द का जीवन कर्ममय जीवन है ।

प्रोफेसर मैक्समूलर एक स्थान पर धर्मों व मतों का विभाग करते हुए कहते हैं धर्मके दो रूप हैं एक प्रचारक धर्म और दूसरा अप्रचारक। मिश्नरी का धर्म प्रचारक धर्म है ? संसार में जो फिर जन्म लेता है बह समझता है कि संसार पर अपने धर्म की ज्योति डाल दे। अप्रचारक धर्म बह है जिसके अनुयायी यह चाहें कि हमारे धर्म का संसार में प्रचार न हो। प्रोफेसर मैक्समूलर लिखता है 'ईसाई और इस्लाम ही प्रचारक धर्म हैं। बौद्ध और हिन्दू धर्म अप्रचारक धर्म हैं। वैदिक धर्म भी अप्रचारक है।

यदि स्वा. दयानन्द के उपदेशों को हम छोड़ देते तो सचमुच हमारा धर्म अप्रचारक धर्म था। हम कहते थे, हम दया करते हैं, परन्तु दया का स्वरूप नहीं जानते थे। आज आर्य जाति का बच्चा-बच्चा जानता है कि जो हिन्दू मुसलमान हो गया हो उसे हम अपनी जाति में पुनः ले सकते हैं। बात यह है कि लोगों ने धर्म के स्वरूप को शुद्धि के स्वरूप में नहीं पहिचाना इसका स्वरूप समझा है मौलाना मुहम्मदअली ने। कोकनाडा कांग्रेस में उन्होंने कहा था कि हिंदू और मुसलमानों में केवल इतना ही भेद है कि 'मुसलमान एक हंडिया पकाते हैं। वे बड़े से आदमी को इसमें से खिलाना चाहते हैं। वे सब इस विषय में एक हैं। विपरीत इसके हिंद समझता है कि उसने एक बड़ा चौका तैयार कर लिया है और उस के भोजन पर हरेक की दृष्टि नहीं पड़ सकती है।'' हम यह समझते हैं कि मुसलमान को मुसलमान रहने दे। ईसाई को ईसाई रहने दें। असल में हम आलसी थे। हम Struggle में आने से डरते थे। स्वा. दयानन्द आया। उसने अपने नाम को सार्थक किया। दया को क्रिया का रूप दिया।

गतांक से आगे.....

सत्यार्थ प्रकाश

अथ चतुर्दशसमुल्लासारम्भः

अथ यवनमतविषयं व्याख्यास्यामः

६३-निश्चय अल्लाह बुरे लोगों और काफिरों को जमा करेगा दोजख में निश्चय बुरे लोग धोखा देते हैं अल्लाह को और उन को वह धोखा देता है। ऐ ईमान वालो। मुसलमानों को छोड़ काफिरों को मित्र मत बनाओ।

-मं० १। सि० ५। सू० ४०आ० १४०।१४२।१४४

(समीक्षक) मुसलमानों के बहिश्त और अन्य लोगों के दोजख में जाने का क्या प्रमाण? वाह जी वाह! जो बुरे लोगों के धोखे में आता और अन्य को धोखा देता है ऐसा खुदा हम से अलग रहे किन्तु जो धोखेबाज हैं उन से जाकर मेल करे और वे उस से मेल करें। क्योंकि-- ''यादृशी शीतलादेवी तादृशः खरवाहनः।''

जैसे को तैसा मिले तभी निर्वाह होता है। जिस का खुदा धोखेबाज है उस के उपासक लोग धोखेबाज क्यों न हो? क्या दुष्ट मुसलमान हो उस से मित्रता और अन्य श्रेष्ठ मुसलमान भिन्न से शत्रुता करना किसी को उचित हो सकती है?' ६३

६४-ऐ लोगो ! निश्चय तुम्हारे पास सत्य के साथ खुदा की ओर से पैगम्बर आया। बस तुम उन पर ईमान लाओ। अल्लाह माबूद अकेला है। - मं० १। सि० ६। सू० ४। आ० १७०। १७१'

(समीक्षक) क्या जब पैगम्बरों पर ईमान लाना लिखा तो ईमान में पैगम्बर खुदा का शरीक अर्थात् साझी हुआ वा नहीं। जब अल्लाह एकदेशी है, व्यापक नहीं, तभी तो उस के पास से पैगम्बर आते जाते हैं तो वह ईश्वर भी नहीं हो सकता। कहीं सर्वदेशी लिखते हैं. कहीं एकदेशी। इस से विदित होता है कि कुरान एक का बनाया नहीं किन्तु बहुतों ने बनाया है' ६४

६५-तुम पर हराम किया गया मुर्दार, लोहू, सूअर का मांस जिस पर अल्लाह के विना कुछ और पढ़ा जावे, गला घोटे, लाठी मारे, ऊपर से गिर पड़े. सींग मारे और दरन्दे का खाया हुआ'

-मं० २। सि० ६। सू० ५। आ० ३

(समीक्षक) क्या इतने ही पदार्थ हराम हैं? अन्य बहुत से पशु तथा तिर्य्यक् जीव कीड़ी आदि मुसलमानों को हलाल होंगे? इस वास्ते यह मनुष्यों की कल्पना है ईश्वर की नहीं। इस से इस का प्रमाण भी नहीं ६५'

६६-और अल्लाह को अच्छा उधार दो अवश्य मैं तुम्हारी बुराई दूर करूंगा और तुम्हें बहिश्तों में भेजूंगा।।

- मं० २। सि० ६० सू० ५। आ० १२'

(समीक्षक) वाह जी! मुसलमानों के खुदा के घर में कुछ भी धन विशेष नहीं रहा होगा। जो विशेष होता तो उधार क्यों मांगता ? और उन को क्यों बहकाता कि तुम्हारी बुराई छुड़ा के तुम को स्वर्ग में भेजूंगा? यहां विदित होता है कि खुदा के नाम से मुहम्मद साहेब ने अपना मतलब साधा है' ६६

६७-जिस को चाहता है क्षमा करता है जिस को चाहे दुःख देता है। जो कुछ किसी को भी न दिया वह तुम्हें दिया' -मं० २। सि० ६। सू० ५। आ० १८।२०

(समीक्षक) जैसे शैतान जिस को चाहता पापी बनाता वैसे ही मुसलमानों का खुदा भी शैतान का काम करता है! जो ऐसा है तो फिर बहिश्त और दोजख में खुदा जावे क्योंकि वह पाप पुण्य करने वाला हुआ, जीव पराधीन है। जैसी सेना सेनापति के आधीन रक्षा करती और किसी को मारती है, उस की भलाई बुराई सेनापति को होती है, सेना पर नहीं ६७

क्रमशः अगले अंक में...

दयानन्द शास्त्रार्थ प्रश्नोत्तर-संग्रह

ईश्वरीय ज्ञान अनादि है

(रविवार १७ सितम्बर, सन् १८८२ तदनुसार भादों सुदि पंचमी संवत् १९३९ विक्रमी)

छठा प्रश्न-

प्रश्न मौ० क्या प्रकृति अनादि है ?

उत्तर स्वा० उपादान कारण अनादि है।

मौ०-अनादि आप कितने पदार्थों को मानते हैं ?

स्वा०-तीन। परमात्मा, जीव और सृष्टि का कारण यह तीनों स्वभाव से अनादि हैं। इन का संयोग, वियोग, कर्म तथा उनका फल भोग प्रवाह से अनादि है। कारण का उदाहण जैसे घड़ा कार्य, उसका उपादान कारण मट्टी बनाने वाला अर्थात् निमित्त कारण कुम्हार चक्र दंडादि साधारण कारण, काल तया आकाश समवाय कारण ।

मौ०-वह वस्तु जिसको हमारी बुद्धि ग्रहण नहीं कर सकती, हम उसको अनादि क्योंकर मान सकते हैं ?

स्वा०-जो वस्तु नहीं है वह कभी नहीं हो सकती और जो है वही होती है। जैसे इस सभा के मनुष्य जो थे तो यहाँ आये। यहाँ हैं तो फिर भी कहीं होंगे। विना कारण के कार्य का मानना ऐसा है जैसे वन्ध्या के पुत्र उत्पन्न होने की बात कहना । कार्य वस्तु से चारों कारण जिनका ऊपर वर्णन किया है, पहले मानने पड़ेंगे। संसार में कोई ऐसा कार्य नहीं जिसके पूर्वकथित चार कारण न हों।

मो० सम्भव है कि जगत् का कारण जिसे आप अनादि कहते हैं, कदाचित् वह भी किसी अन्य वस्तु का कार्य हो। जैसे कि बिजली के बनने में कई साधारण वस्तुएं मिलकर ऐसी शक्ति उत्पन्न हो जाती है जो अत्यन्त महान् है। इस वार्तालाप के परिमाण से प्रकट है कि प्रत्येक वस्तु के लिए कोई कारण चाहिए तो कारण के लिए भी कोई कारण अवश्य होगा ।

स्वा०-अनादि कारण उसका नाम है जो किसी की कार्य न हो। जो किसी का कार्य हो उसको अनादि अथवा सनातन कारण नहीं कह सकते किन्तु वह परम्परा और पूर्वापर सम्बन्ध से कार्य कारण नाम वाला होता है। यह बात सब विद्वानों को जो पदार्थविद्या को यथावत् जानते हैं, स्वीकरणीय है। किसी वस्तु को चाहे जहाँ तक अवस्थान्तर में विभक्त करते चले जावें, चाहे वह सूक्ष्म हो चाहे स्थूल, जो उसकी अन्तिम अवस्था होगी, उसको कारण कहते हैं और जो यह बिजली का दृष्टान्त दिया, वह भी निश्चित कारणों से होता है जो ''उसके लिये आवश्यक हैं। अन्य कारणों से वह नहीं हो सकती ।

हिन्दुओं में एकता क्यों नहीं?

–वेद्रकाश आर्य

पाँच हजार वर्षों से सोने वालों। हे राम और कृष्ण के वंशजों। ऋषि-मुनियों की सन्तानों। आर्य पुत्रों। उठो। इतनी गहरी और चिरनिद्रा ने हमारा नाम तक बदलकर रख दिया है। 'हिन्दू' और कहे जाने लगे हम अपने ही घर में विदेशी क्योंकि त्याग, तपस्या एवं धर्म से कोसों दूर पड़े स्वार्थियों ने हमारे पवित्र ज्ञान के स्रोत (सृष्टि के प्रारम्भ में ईश्वर प्रदत्त) वेद वाणी को हमसे छीन लिया है और ईश्वर पूजा के नाम पर हमें दे दिया है पाषाण व धातु का परमेश्वर। वह भी एक नहीं, अनेक रूप। वो भी भिन्न-भिन्न ताकि हम एक न हो सकें।

हमारे देश के प्राचीन वासियों ने अपने को 'हिन्दू' कभी नहीं कहा। भारतवासियों के लिए 'हिन्दू' शब्द का प्रयोग चारों वेद, स्मृति ग्रन्थ, उपनिषद्, दर्शन शास्त्र, रामायण, महाभारत, पुराण आदि किसी भी ग्रन्थ में नहीं हुआ है। 'हिन्दू' शब्द हमारे विघटन का प्रतीक है। 'हिन्दी' या 'हिन्दू' कहे जाने वाले हम भारतीयों को एकता के सूत्र में बाँधने वाला कोई एक उपास्य देव नहीं है। यहाँ विभिन्न देवी-देवता हैं। सभी की जिसमें आस्था हो ऐसा कोई एक ग्रन्थ नहीं है। सभी की एक भाषा नहीं है। धर्म में सभी की एक मान्यता नहीं है।

अपने इस देश में 'हिन्दू' उस विघटित वर्ग का नाम है जिसमें आस्तिक भी हैं अर्थात् प्रभु में, प्रभु की सृष्टि में और प्रभु के ज्ञान वेद में आस्था रखने वाला भी है। शाकाहारी भी है और मांसाहारी भी है। सगुणोपासक भी है और निर्गुण उपासक भी है। उपासना में विश्वास न रखने वाला भी है। शैव भी है तो उनसे लड़ने वाला वैष्णव भी है। नदियों, वृक्षों, चौराहों के पूजने वाले भी हैं। मुसलमानों की कब्र पर चादर चढ़ाने वाले भी हैं। जितने प्रकार के विघटनों की कल्पना हो सकती है वे सब इस देश में विद्यमान हैं।

हनुमान चालीसा, श्रीमद्भागवद्गीता, तुलसी की रामायण या सत्यनारायण की कथा से प्रेरणा लेने वाले व्यक्तियों से लेकर सन्त और सूफी सम्प्रदाय तक के व्यक्ति आपको हिन्दू वर्ग में मिलेंगे। भारत की सीमा के भीतर विविध मन्दिर और तीर्थ स्थान हैं। सभी प्रकार की गप्पों से भरे भागवत आदि पुराण है।

अभिप्राय यह है कि मुसलमानों, ईसाइयों, बौद्धों की तरह इनको एक सूत्र में बाँधने वाली कोई चीज नहीं है। यहाँ तक कि मनुष्य-मनुष्य में सम्बन्ध स्थापित करने वाले अभिवादन के स्वरूप भी भिन्न-भिन्न है। किन्हीं दो मन्दिरों में एक सी पूजा, प्रार्थना, स्तुति नहीं है। अनपढ़ मूर्ख हिन्दू तो हर जड़ मूर्ति के सामने सिर झुकाता चला जाता है। यह हिन्दू का विघटित स्वरूप है। जिसका कतिपय विद्वानों ने उदारता नाम दे रखा है। हिन्दू इसी मूर्खता को सहनशीलता कहता है।

हिन्दू कौन?

भारतीय हिन्दू वह है जिसके समाज में निम्नलिखित ये पाँच भयंकर कलंक हो और जिनमें इन कलंकों का विरोध करने की क्षमता भी न हो।

ये पाँच भयंकर कलंक

(१) मूर्ति पूजा और अवतारवाद, (२) अस्पृश्यता या छुआछूतवाद (३) जन्म से जात-पांतवाद (४) परम स्वार्थी, भोगी, महन्तों, पुजारियों के हाथ में स्वर्ग-नरक की ठेकेदारी, सस्ती मुक्ति का लालच और स्वर्ग के नाम पर श्रद्धालु भक्तों का शोषण, नित्य नए बाबा, नए देवी-देवता, नई माताओं में आस्था, (६) मृतक श्राद्ध, ताबीज, भूत-प्रेतवाद, जन्म पत्री, हस्तरेखा भविष्य, फलित ज्योतिष, आशीर्वाद और अभिशाप के प्रलोभन और आतंक। विविध रूढ़ियों एवं मन्दिर और तीर्थों से सम्बन्धित अन्धविश्वास।

सनातन धर्म के अनुसार हमारे देश का सर्वाधिक प्राचीनतम नाम आर्यावर्त है। बाद में भारत या भारतवर्ष है। भारत हमारा राष्ट्र है। हम ना हिन्दू हैं, न मुसलमान हैं, न ईसाई हैं, न सिख, न जैनी। भारतीय संस्कृति एवं विशुद्ध परम्पराएँ विपरीत परिस्थितियों में बराबर संघर्ष करती आ रही है। भारत में अन्धविश्वासों के पोषण और समर्थन का नाम हिन्दुत्व है। अन्य देशों में ईसाई और मुसलमान भी इन्हीं अन्धविश्वासों का पोषण और समर्थन कर रहे हैं। खेद है शासकों का प्रयत्न सत्योन्मुखी नहीं है। ऋषि-मुनियों के समय की आर्षकालीन परम्पराएँ, महर्षि दयानन्द और आर्य समाज इन उपरोक्त कलंकित मान्यताओं का न तो पोषण करती है और न समर्थन। हम तुम्हारी असत्य मान्यताओं, अन्धविश्वासों और अनैतिकताओं का प्रतिवाद न करें और तुम हमारी असत्य मान्यताओं, अन्धविश्वासों और अनैतिकताओं का विरोध न करो, इस प्रकार के समन्वय की बात करना पतनोन्मुख है। आर्य समाज का दृढ़ संकल्प है कि किसी भी स्थिति, देश, काल या अवस्था में किसी भी अन्धविश्वास, असत्य या अनैतिकता के साथ साझा या समझौता नहीं करेगा।

प्रभु की कला पर, ज्ञान-विज्ञान और सत्य शिल्प पर सब एक हो सकते हैं। किन्तु मन्दिर, मस्जिद, गिरजे, कब्रों, अवतारवाद, पैगम्बरवाद, मूर्तिपूजा और छल-कपटपूर्ण चमत्कारों पर एकता नहीं हो सकती। अपने देश में हिन्दू कहे जाने वालों को इस बात पर पूरी तरह विचार करने की आवश्यकता है। आर्य समाज भारत में अपने आपको किसी भी राष्ट्रीय अंग से पृथक् नहीं करना चाहता। वह सबका हितैषी है। चाहे वह किसी भी प्रदेश या मत-मतान्तर का क्यों न हो किन्तु अन्धविश्वासों और रूढ़ियों को तोड़े बिना तथा परम्परा से चली आ रही पद्धतियों और आस्थाओं को शुद्ध और पवित्र किये बिना हम अपने राष्ट्र का एकता के आधार पर संगठन नहीं कर सकते और ना ही राजनीतिक स्तर पर समान नागरिक संहिता (कॉमन सिविल कोड) को लागू कर सकते क्योंकि अनैतिक और अन्धविश्वासी तत्वों के साथ समझौता करने से राष्ट्रीय एकता सम्भव नहीं है।

भारतवर्ष की सभ्यता, संस्कृति और सिद्धान्त के इतिहास में गुरुवर विरजानन्द और उनके शिष्य ऋषि दयानन्द की सबसे महत्वपूर्ण शोध आर्ष-काल और अनार्ष-काल का निर्धारण है। ब्रह्मा से लेकर जैमिनी मुनि पर्यन्त तक का इतिहास काल 'आर्ष' और उनके बाद का काल 'अनार्ष' या अनाचार्य युग है। आर्ष-काल में केवल वेद ही मनुष्य का स्वाभाविक सहज धर्म था। ईश्वर और मनुष्य के बीच न कोई अवतार था, न पैगम्बर, न गुरु, न तो देवालय थे और न मूर्तिपूजा थी। वैदिक नित्य कर्मों के साथ-साथ पंच महायज्ञ एवं १६ संस्कार आदि पर किये जाने वाले विशिष्ट यज्ञों का प्रचलन था। वेद में, ईश्वर में और ईश्वर कृत सृष्टि में आस्था थी। न वैष्णव थे, न शैव, न जन्म से जात-पांत थी, न महन्तों के अखाड़े। सब संगठन सूत्र में आबद्ध आर्य थे। अनार्ष काल से हमारा पतन प्रारम्भ हुआ। वेदों के नाम पर हिंसा प्रचलित की गई। यज्ञों के स्वरूप मांसादि की आहुतियों से भ्रष्ट किये गये। मनुष्य स्वार्थी बन गया। धर्म के नाम पर मजहब, सम्प्रदाय, मत-मतान्तर आरम्भ हो गए। देश का विघटन हुआ और संस्कृति का ह्रास। शासन विदेशियों से पददलित हुआ। यह पतन और विघटन जब चरम सीमा पर पहुँचा तो हमें मुस्लिम काल में शासकों द्वारा हिन्दू कहा गया। (हिन्दू शब्द फारसी-अरबी भाषा का शब्द है। उनके शब्द कोष में इसके अर्थ काला, गुलाम, काफिर, चोर इत्यादि है)। संस्कृत भाषा और वैदिक संस्कृति बनाम भारतीयता से हम दूर हटते गए। यह विघटन और पतन हिन्दू और हिन्दुत्व नाम से हमारे सामने आया।

प्यारे भाइयों-बहनों! आर्य बनने का पुनः प्रयत्न करो। हिन्दुत्व को अपने भीतर से निकाल दो। स्वामी दयानन्द हिन्दुओं को ईसाई या मुसलमान बनने से बचाना चाहते थे। वे तो अभारतीय मुसलमानों और ईसाइयों से भी प्यार करते थे कि आर्य बनो और सम्प्रदायवादिता छोड़ो। महर्षि ने काशी के पण्डितों को अनेक बार शास्त्रार्थ के लिए ललकारा और कहा कि वेद में मूर्तिपूजा या पार्थिवपूजा दिखलाओ लेकिन वे न दिखला सके, पराजित हुए। फिर भी अधिकांश पण्डितों ने मूर्तिपूजा नहीं छोड़ी। जड़ मूर्तिपूजा करने-कराने में पण्डितों का स्वार्थ तब भी था, अभी भी है, और आगे भी रहेगा। महर्षि कहा करते थे कि मूर्तिपूजा ईश्वर तक पहुँचने की प्रथम सीढ़ी नहीं है। यह तो वह खाई है जिसमें गिरकर फिर ऊपर उठना या बाहर निकलना अत्यन्त कठिन है।

आपसे प्रार्थना है कि उपर्युक्त विचारों को सुनने या समझने के सौभाग्यशाली शुभ अवसरों को जो कि आपके आसपास आर्य समाज के उत्सवों, प्रवचनों, विशेष महायज्ञों में प्राप्त करने योग्य है। कभी हाथ से न निकलने दीजिये। जिस सत्यार्थ प्रकाश पर अनेक मुस्लिम देशों में रोक लगी है उस ऋषि के ग्रन्थ को अवश्य पढ़ें और आर्य समाज के सदस्य बनकर वैदिक जीवन पद्धति अपनाइये ताकि आप अण्डा, मांस, मछली, बीड़ी, सिगरेट, शराब, तम्बाकू, चरस, भांग, गांजा, स्मैक आदि व्यसनों एवं हानिकारक सामाजिक रूढ़ियों व अन्धविश्वासों से अपनी सन्तानों को बचा सको और प्रभु कृपा से जगद्गुरु भारतमाता अपने आर्यावर्तीय उज्ज्वल स्वरूप को पुनः प्राप्त कर सके।

चलभाष-९३११८०१२१२
(साभार-वैदिक संसार)

पृष्ठ....१ का शेष

वंचित न हो, अपितु सब सिंचित हों। यही वेद का मधुर सामगान है।

४. माता भूमि पुत्रोहम् पृथिव्याः (अथर्ववेद १२.१.१२)- ज्ञान, कर्म, उपासना इन अवयवों के समन्वित रूप से निर्मित रसायन ही अथर्ववेद का विज्ञान है। पश्चिम प्रभावित विज्ञान अपने आविष्कारों से अति विचित्र यन्त्र-उपकरणों का निर्माण कर सकता है। कम्प्यूटर, दूरदर्शन, दूरभाष, इण्टरनेट और न जाने क्या क्या। इन सबसे भौतिक सुख समृद्धि का विस्तार तो होता दिखाई देता है, किन्तु आन्तरिक शान्ति तिरोहित हो जाती है। आविष्कार तो अत्यन्त विस्यमकारक अदभुत लगते हैं, किन्तु इन सबका प्रारम्भ प्रीतिकर, किन्तु परिणाम प्राणहर सिद्ध होता है। आधुनिक भोगवादी विज्ञान के चमत्कार चीत्कार में नित्य परिणत होते देखे जाते हैं। इनमें सर्वाधिक स्थूल पृथ्वी है, जो सम्पूर्ण प्रकृति का प्रत्यक्ष प्रतिनिधित्व करती है। वेद के अनुसार यह हमारी सृजन-पालन व आधार देने वाली माता है, साथ ही हम इसके पुत्र हैं। इसके साथ हमारा व्यवहार माता-पुत्र की भांति होना चाहिए। माता यदि जन्म देकर सन्तान का पालन पोषण करती है, तो सन्तान भी माता का सम्मान और उसकी सेवा में अपने जीवन की बाजी लगाने को प्रस्तुत रहती है। आज की भांति सागर, धरातल, पर्वत, आकाश में पाये जाने वाले पदार्थ यथा रत्न, राशि, जल, वृक्ष-वनस्पति, पत्थर, वायु सभी का भरपूर दोहन करना ही मानव का उद्देश्य नहीं होना चाहिए। दोहन भी ऐसा कि इन प्राकृतिक पदार्थों का समूल विनाश होता चला जाये तथा पर्यावरण भयंकर रूप से प्रदूषित हो जाए प्रतिदिन सोने का एक अण्डा देने वाली मुर्गी से सन्तुष्ट न होकर एक बार में ही मुर्गी के पेट को फाड़कर सोने के सारे अण्डे एक साथ निकालने वालों को सोना तो मिलता ही नहीं, मुर्गी से भी हाथ धोना पड़ता है।

भूमि की भांति मानव की अन्य मातायें भी हैं। उनमें से एक माता गाय भी है। उसके पोषणकारी स्वर्णिम दुग्ध से जब जी न भरा तो मानव ने उसके मांस को ही खाना प्रारम्भ कर दिया। कृत्रिम विषैले दूध से मानव सन्तान इधर रोग ग्रस्त होती है, उधर हजारों वधशालाओं में गौओं की हत्या करके गोमांस को भारत से निर्यात किया जाता है। दैनिक जागरण (२३.०७.२०००) के अनुसार दिल्ली के भोजन गृहों में गोमांस परोसे जाने के विरोध में जन्तर-मन्तर पर प्रदर्शन किया गया, वह भी मुस्लिम समुदाय के जागरूक व्यक्तियों के द्वारा। अमर उजाला दिनांक (२४.०७.२०००) के अनुसार अमेरिका में शेर के मांस को परोसे जाने पर लोगों द्वारा आपत्ति की गई। यह तो समझ में आता है कि गाय को अंगूर, अन्न, मेवा खिलाकर अधिक गुणवत्ता पूर्ण दुग्ध प्राप्त किया जाए, किन्तु यह समझ में नहीं आता है कि शाकाहारी पशु गाय के अधिक मांस को प्राप्त करने के लिए उसे धोखे से चारे में मांस मिला कर खिला दिया जाये। इस अस्वाभाविक क्रियाकलाप से जब 'मैडकाव' बीमारी से मनुष्य प्रभावित हुए, तो बड़ी संख्या में उन गायों को मार कर अपनी जान बचायी। इतना भोगते हुए भी वनस्पतियों की स्वाभाविक प्रोटीन से अतृप्त मानव इनके जनन गुण सूत्र (जीन्स) में जन्तुओं की प्रोटीन प्रविष्ट करके न जाने और कौन सी असाध्य व्याधि बुलाना चाहता है। यह है कभी न पूरी होने वाली मनुष्य की हत्यारी हवश !

अथर्ववेद इस हवश पर नियन्त्रण करके 'वरदा वेदमाता' के ऐसे विज्ञान की प्रेरणा देता है, जिससे मानव को जीते जी आयु, प्राणशक्ति, प्रजा, पशु, कीर्ति एवं ब्रह्मवर्चस्व तो मिलें ही, मरने के बाद ब्रह्मलोक का दिव्य आनन्द भी मिले। ऋग्वेद के ज्ञान के पदों से धर्म का बोध होता है। यजुर्वेद के कर्म सृजित अर्थ से मिलकर पद से पदार्थ बन जाते हैं। सामवेद की सात्विक कामनाओं से यह पदार्थ जगहितार्थ समर्पित हो जाते हैं। यही समर्पण अथर्ववेद के विज्ञान द्वारा मानव को मोक्ष की ओर अग्रसर कर देता है। इस प्रकार मानव ''धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष'' रूपी पुरूषार्थ चतुष्टय के अपने लक्ष्य को प्राप्त कर लेता है। ज्ञान, कर्म, उपासना एवं विज्ञान-चार वेदों के ये प्रधान चार विषय हैं, किन्तु सामान्य रूप से चारों वेदों के प्रत्येक मन्त्र में इन विषयों का अनुपम सामंजस्य रहता है। बिना किसी भेदभाव के मनुष्य मात्र स्वसामर्थ्यानुसार ''वेद का पढ़ना-पढ़ाना, सुनना-सुनाना'' परमधर्म का अनुगमन कर अपने जीवन को देदीप्यमान कर सकता है तथा वेद की 'मनुर्भव' भावना का जीवन्त स्वरूप बन सकता है।

-पं. देवनारायण भारद्वाज

रामभद्राचार्य जी क्षमा मांगें!!

-आचार्य दयाशंकर
संस्कृत विभागाध्यक्ष
गुरूकुल कुरूक्षेत्र

बड़े दुःख तथा शर्म की बात है कि जिस प्राचीन आर्यावर्त भारत की शिक्षा, संस्कार, सभ्यता, शालीनता तथा ज्ञान-विज्ञान का समस्त भूखण्ड आदर और सम्मान करता था। जिसकी आध्यात्म विद्या के आगे समूची दुनियां नतमस्तक थी। सम्पूर्ण संसार जिस विश्वगुरु भारत की ओर टक-टकी लगाकर आशा और विश्वास के साथ देखता था कि कब कौन-सा वेदों के बीच से निकला सन्देश भारत की ओर से आए जो अन्धकार से व्याप्त जीवन के क्षेत्र को प्रकाशित कर वास्तविक लक्षित जीवन मार्ग दिखा दे। त्रिविध दुःखों को नष्ट कर मुक्ति पर्यन्त मार्ग प्रशस्त करने वाली वह विद्या, वेदों के मध्य से प्रकट हुआ मानवमात्र का कल्याण करने वाला वह वैदिक धर्म, वेदों के व्याख्या ग्रन्थ दर्शन, उपनिषद् आदि का पवित्र सन्देश, दुर्भाग्यवश महाभारत के विनाशकारी युद्ध ने अपने शिकंजे में कसकर मृतप्रायः कर दिया किन्तु परम् पिता परमात्मा की कल्याणमयी दृष्टि भारतवर्ष पर पड़ी कि इस धरा के पुनरुत्थान हेतु गुजरात प्रान्त के काठियावाड़ जिले में स्थित टंकारा ग्राम की भूमि ने एक दिव्य बालक को मूलशंकर के रूप में जन्म दिया, जो आगे चलकर महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती के नाम से विख्यात हुए।

प्रज्ञाचक्षु गुरु विरजानन्द के चरणों में अन्तःवासी बनकर वेद, शास्त्र, व्याकरण, छन्द, ज्योतिष आदि की विद्या का साक्षात्कार किया। प्रज्ञाचक्षु विरजानन्द दण्डी अन्धे जरूर थे किन्तु परमात्मा ने उन्हें ऐसी दिव्य शक्ति प्रदान की थी कि उन्होंने अपनी कुशाग्र विवेक बुद्धि से सत्यासत्य का साक्षात्कार कर लिया था, दृष्टि न होते हुए भी उनको अपनी अंतश्चक्षु दिव्य दृष्टि द्वारा वेद व्याकरण शास्त्रों का यथावत ज्ञान प्राप्त था। विश्वगुरु भारत में फैले पाखण्ड अंधविश्वास, कुत्सित रूढ़ि परम्परा, वेदादि सत्य शास्त्रों के अनर्थ का वास्तविक अर्थ, ज्ञान के अन्धे गांठ के पूरे गुरुडमवाद, धर्म को तोड़-मरोड़कर प्रस्तुत करने वाले मठो पर कब्जा किये धर्म के ठेकेदार, जो धर्म का मिथ्या भय दिखाकर राजाओं के ऊपर राज कर रहे थे। अपने चेले, चेलियों को उपदेश करते और उन्हें बहकाकर उनकी सम्पत्ति लूटने वाले भूखे भेड़ियों के द्वारा भारत को कमजोर बनाने वाली कडियों को देखकर वो रोते थे, किन्तु विवश थे, किसी योग्य शिष्य की प्रतिक्षा कर रहे थे।

ईश्वर की कृपा से प्रतीक्षा समाप्त हुई और मानों द्रोणाचार्य को अर्जुन तथा आचार्य चाणक्य को प्रतापी चन्द्रगुप्त मिल गया। अपनी व्यथा को शमन करने तथा वेद ज्ञान का सूर्य फिर से उदय होगा, चहचहाते पक्षियों की गुन्जन के साथ, तमसमयी रात्रि को पीछे धकेलते हुए नव प्रभात का फिर से उदय होगा। इस आशा के साथ गुरुवर ने दयानन्द को सम्पूर्ण सामर्थ्य से वेद, व्याकरण (अष्टाध्यायी से लेकर महाभाष्य पर्यन्त) आत्मसात कराया बुद्धिमान दयानन्द न इन सभी विद्याओं को अपनी प्रखर प्रतिभा से मात्र तीन वर्ष में पूर्ण कर लिया, तदोपरान्त स्नातक दयानन्द गुरु-दक्षिणा में कुछ लौंग लेकर गुरु-चरणों में विदा माँगने गये। यह देखकर गुरु विरजानन्द के सामने भारत का वो भयानक दृष्य अन्तर्दिष्टि में धूम गया जो भारत के अस्तित्य एवं वेदों के ज्ञान-विज्ञान को मठ-मन्दिरों में बैठे भूखे-भेड़िये नोच रहे थे। उनकी दृष्टिहीन आँखो से अश्रुधारा निकल रही थी, ऋषि के पूछने पर गुरुवर बोले-दयानन्द मैं भारत की वैदिक संस्कृति, मर्यादा तथा ज्ञान का विनाश होते देख रहा हूँ। वैदिक धर्म को महासागर में डूबकर दम तोड़ते देख रहा हूँ, वेद ज्ञान-विज्ञान का सूर्य पश्चिम दिशा में लीन होते देख रहा हूँ अरे! कोई तो हो जो इस महाविनाश को रोक सके। यह कहते-कहते विरजानन्द रूपी पर्वत पिघलने लगा।

दयानन्द को समझते देर न लगी और बोले-गुरुवर। वह पुत्र पापी है जिसके रहते उसका पिता दुःखी हो, और वह शिष्य महापापी है जिसके रहते उसका आचार्य व्यथित हो। ये जीवन अभी से आपका है आदेश करिये मुझे करना क्या है? विरजानन्द की प्रसन्नता का ठिकाना ना रहा और बोले-दयानन्द! इस अखण्ड भारत को खण्डित होने से बचा लो, वेदों का अज्ञानी लोग अनर्थ करके दूषित कर रहे हैं, उन वेदों की रक्षा करो, आदि-आदि। ऋषिराज ने शेर की भांति अंगडाई ली और क्रोध से रक्तनेत्र हुए गुरुचरणों में समर्पित होकर बोले- गुरुदेव ! आशीर्वाद दीजिए जब तक भारत को तथा भारतीय वेद परम्परा को पुनर्स्थापित नहीं कर लूंगा तब तक मौत भी मुझे नहीं छू सकेगी और आदित्य ब्रह्मचारी दयानन्द ने अखण्ड भारत में पाखण्ड, अन्धविश्वास आदि कुरीतियों के विरुद्ध महा अभियान का शंखनाद कर दिया। वेदविद्या के प्रचण्ड तेज से चमत्कृत दयानन्द ने सम्पूर्ण भारत का भ्रमण कर उन-उन कड़ियों को देखा जो भारतीय संस्कृति, अस्तित्व, ज्ञान-विज्ञान परम्परा से खिलवाड़ कर रही थी।

नर्मदा के तट पर घूमने से नुकीले बर्फ से घायल हुए पैरो की परवाह न करते हुए अपने संकल्प को दृढ़ किया और पाखण्डियों-विधर्मियों के विरुद्ध अज्ञान से ज्ञान के युद्ध की घोषणा कर दी। वेदों में मूर्तिपूजा का विधान नहीं अपितु विरोध है, इस सत्य को वेदों के तर्कों से सिद्ध किया। स्त्री शिक्षा, स्त्री जाति को शिक्षा, पठन-पाठन तथा वेद विद्या का अधिकार दिलाया, पाखण्ड, अन्धविश्वास, रुढ़िवादी परम्परा की दलदल में फंसे विवश समाज को बाहर निकाला और उनके लिए वेदों का सीधा सच्चा मार्ग प्रशस्त किया। परतन्त्रता की बेड़ियों में जकड़ी भारत माता को स्वतन्त्र करने के लिए सबसे प्रथम 'स्वराज्य' का नारा दिया जिसका परिणाम है कि देश को आजादी दिलाने वाले वीरों में ८५ प्रतिशत् आर्य समाजी और ऋषि दयानन्द के अनुयायी थे।

ऐसे महापुरुष और युगपुरुष योगिराज पर एक भ्रमित मस्तिष्क रामभद्राचार्य नामक व्यक्ति ने बहुत बड़ा मिथ्यारोप लगाया कि 'स्वामी दयानन्द ने एक बड़ी भूल कर दी। उन्होंने रामायण और महाभारत को कल्पित ग्रन्थ बताया। रामभद्राचार्य जी आप पर समूचे आर्यसमाज और आर्यसमाज से प्रेरित समाज को हँसी आती है। आप इतने वृद्ध हो किन्तु ज्ञान में इतने बालक कैसे हो गये? ऋषि दयानन्द के ऊपर मिथ्यारोप लगा दिया? अपने मंच से, अपने भक्तो को बेतुकी बातें करके भ्रमित कर रहे हैं और उनसे तालियों पिटवाकर झूठे धमण्ड में डूबे है। परमात्मा की न्याय व्यवस्था अनुसार दुर्भाग्य से आप दृष्टिहीन है इसका सभी को महत् दुःख है, यही अवस्था जगद्गुरु महर्षि दयानन्द के गुरु विरजानन्द की भी थी किन्तु उनके अन्तश्चक्षु देख पा रहे थे, तभी तो देव दयानन्द को वामन से विराट रूप में प्रकट कर दिया। किन्तु आप क्या कर रहे सोचिए? इस पाप से बचने के लिए आप प्रायश्चित करें और किसी आर्य समाज के विद्वान को बुलाकर तथा अपने उन चेलों को बैठाकर 'सत्यार्थप्रकाश' के तृतीय समुल्लास का वह प्रकरण सुने और सुनावें जिसमें रामायण और महाभारत पढ़ने-पढ़ाने का स्पष्ट उल्लेख ऋषिराज ने किया है, ऋषि लिखते है-

''तत्पश्चात मनुस्मृति, वाल्मीकि रामायण और महाभारत के उद्योग पर्वान्तर्गत विदुरनीति आदि अच्छे-अच्छे प्रकरण जिनसे दुष्ट व्यसन और उत्तमता, सभ्यता प्राप्त हो वैसे को काव्यरीति से अर्थात् पदच्छेद, पदार्थोक्ति, अन्वय, विशेष्य-विशेषण और भावार्थ को अध्यापक लोग जनावें और विद्यार्थी जानते जाएं इनको वर्ष के भीतर पढ़ लें।''

यह प्रकरण स्वामी दयानन्द के अमर ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश के तृतीय समुल्लास से ही उद्धृत है, इसके अतिरिक्त उसी सत्यार्थप्रकाश के ११वें समुल्लास की अनुभूमिका में लिखा है-वेदों की अप्रवृत्ति होने का कारण महाभारत युद्ध हुआ। आगे उसी ११वें समुल्लास में फिर लिखा-ईरान का शल्य आदि सब राजा राजसूय यज्ञ और महाभारत के युद्ध में सब आज्ञानुसार आए थे।' रामभद्राचार्य जी अब आप क्या कहेंगे महर्षि पर मिथ्यारोप लगाते समय आपको तनिक लज्जा नहीं आई। ऋषियों की परम्परा के उद्धारक ऋषि दयानन्द से तथा अपने अन्धभक्तों से माफी माँगिये नहीं तो परिणाम भयानक होंगे। जिस युगप्रवर्तक दयानन्द ने देश को, अज्ञानमयी रात्रि में सोए हुए समाज को जमाने के लिए एक बार नहीं, दोबार नहीं लगातार सत्रह बार जहर के प्याले पीये और राष्ट्र को एक नयी सोच, नया मार्ग दिखाकर उल्टी धारा के मुँह को मोड़कर सच्चा मार्ग दिखाकर राष्ट्र के साथ-साथ विश्व को कल्याण का मार्ग दिखाया, आपने मात्र हथेली पीटने वाले भक्तों के आगे बेतुकी और अज्ञान से युक्त बात कह डाली। आप तो श्रीराम की कथा करने वाले प्रबुद्ध आचार्यों में हैं। आपने श्रीराम और माता सीता के चरित्र को वास्तविकता से पढ़ा ही नहीं, आपने कहा कि विवाह के समय सीता की आयु मात्र छह वर्ष थी, आपने किस अप्रमाणिक रामायण से पढ़ लिया यह मिथ्या कथन? देखिए बाल्मीकि रामायण में सप्रमाण है कि विवाह के समय श्रीराम और माता सीता जी की कितनी आयु थी-वाल्मीकि रामायण, आर्यमुनिंत टीका, पृष्ट सं०-८६१ अरण्यकाण्ड सप्त विशति सर्ग श्लोक सं०-३ में सीता जी रावण से कहती है-

मम भर्ता महातेजा वयसा
सप्तविंशकः।
अष्टादश हि वर्षाणि मम जन्म
निगण्यते।।

इस प्रमाण से यह सिद्ध हो जाता है कि विवाह के समय माता सीता की आयु अट्ठारह वर्ष तथा श्री राम जी की आयु पच्चीस वर्ष थी। इस भाषण में एक और बात कही कि पाणिनी अष्टाध्यायी प्रथम चौदह सूत्रों में भी राम की महिमा बीज रूप में है। अरे गुरुदेव पाणिनी को तो बक्श दो हमने व्याकरण पढ़ा है और विधिवत गुरुकुल में अन्तेःवासी रूप में पढ़ा ये प्रत्याहार सूत्र कहलाते है, प्रति. आहार यण सन्धि होकर प्रत्याहार शब्द सिद्ध होता है जिसका अर्थ है पकड़ना, ग्रहण करना। मान्य भद्राचार्य जी! पाणिनी मुनि ने प्रत्याहार सूत्रों की रचना प्रथम अक्षर और अन्तिम अक्षर के मध्य जितने भी बीच में वर्ण अक्षर हैं उनको भी ग्रहण करने के लिए की है।

आपको एक उदाहरण देकर समझाता हूँ एक सूत्र है 'इकोयणचि'' इसमें ''इक्'' प्रत्याहार बना जिसका अर्थ है कि इक के बीच में जितने अक्षर (इ, उ, ऋ, लृ) इनको 'अचि'' भिन्न स्वर परे रहते यण सन्धि होती है, तो देवता जी। इसमें श्रीराम की महिमा कहाँ से घुस गयी? पूज्य आचार्य जी आपसे विनम्र प्रार्थना है कि इस प्रकार अशोभनीय तथा मिथ्या ज्ञान देकर भोले-भाले लोगों को भ्रमित मत कीजिए। आपने वेदों पर भी आरोप लगाया कि ऋग्वेद में श्रीराम तथा सीता जी का वर्णन है और ऋग्वेद की ऋचा भी प्रस्तुत की जहाँ विसर्ग सन्धि के अन्तर्गत ''र'' हो जाता है।

व्याकरण में नियम है कि अया आको छोड कर किसी भी स्वर के पीछे विसर्ग हो तो उसे 'र' हो जाता है और पीछे स्वर हो तो उसीमें आकर मिल जाता है। इसका एक उदाहरण देखिए- हरिः आमत्रणम्। यहाँ विसर्ग से पूर्व 'इ' वर्ण होने से विसर्ग को 'और' से बाद आमन्त्रणम् का प्रथम अक्षर 'आ' में मिलकर शब्द बना 'हरिरामन्त्रणम्'' तो इसमें आया ''राम'' से श्रीराम का ग्रहण करना तो अज्ञानता ही होगी और अज्ञानी लोग जिसको व्याकरण का तनिक भी ज्ञान नहीं वह तो इसका अर्थ हरिराम ही करेगा। आचार्य रामभद्रजी वेदों के मन्त्रों को वास्तविकता से समझने के लिए व्याकरण का यथावत् ज्ञान नितान्त आवश्यक है. जिसका प्रमाण ऋषि पतंजलि के महाभाष्य में मिलता है। ''रक्षार्थवेदानामऽयेयं व्याकरणम्'' अर्थात् वेद मन्त्र को समझने के लिए व्याकरण परमावश्यक है। व्याकरण के यथावत ज्ञान के अभाव में महीधर ने वेदों का महा अनर्थ किया है जैसे-यजुर्वेद में नमः श्वभ्यः (यजुर्वेद अ०-१६, मंत्र-२८) इस मन्त्र भाग का अर्थ महीधर ने किया ''कुत्ता रूप जो रुद्र भगवान है उसको नमस्कार'' इस मन्त्र के टुकडे का लौकिक शब्दकोश के अनुसार तो अर्थ कुत्तों को नमस्कार' ऐसा ही होना चाहिए था, महीधर ने सोचा कि कुत्तों को नमस्कार करना तो ठीक नहीं इस कारण उन्होंने कुत्तों को रुद्र का रूप अपनेआप गढ़ लिया, जो मन्त्र में कहीं पर भी नहीं है। अब इसी मन्त्र के टुकडे का अर्थ व्याकरणविद् दयानन्द सरस्वती वैदिक शब्दकोश निघण्टु के आधार पर करते है 'लोग कुत्तों को भोजन (अन्न) देवें क्योंकि ऋषि दयानन्द व्याकरण के साक्षात्कारकर्ता ऋषि थे।

यास्कमुनिकृत निरुक्त में नमः का अर्थ ''आयुः ब्रह्म वर्च यशः अन्नम् (निरुक्त- ३/६) ये सभी अर्थ है अतः प्रसंगानुसार अन्न शब्द का ग्रहण किया जाएगा तभी मन्त्र का सही सार्थक अर्थ होगा। आचार्य जी आपने भी कुछ ऐसा ही अनर्थ कर दिया जो कि वाचिक पाप की श्रेणी में आता है। क्या वेद में श्रीराम का वर्णन है? राम भद्राचार्य जी! थोड़ा बुद्धि पर जोर दीजिए और विचार कीजिए कि श्रीराम का जन्म त्रेतायुग में हुआ और त्रेतायुग से भी पहले सतयुग बीत चुका था जिसमें सत्यवादी हरिश्चन्द्र वेदों के अनुयायी थे और उससे भी पूर्व में सृष्टि के आदि में परम पिता परमेश्वर में चार ऋषियों के पावन हृदय में वेदों का ज्ञान प्रकट किया जिनके नाम अग्नि, वायु, आदित्य अंगिरा हैं, इनको क्रमशः ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद का ज्ञान दिया। अब आप इतना तो सोचो आचार्य प्रवर। जो राम वेदों के मर्मज्ञ थे, जिन्होंने गुरुकुल में जाकर विधिवत वेद-वेदाङ्ग आदि की शिक्षा गुरुमुख से प्राप्त की उन्हीं का वर्णन वेदों में, ये कैसे सम्भव हो सकता है? ऐसा लगता है आप तुक्के मार कर बोलते हैं कृपया सत्य ज्ञान का प्रचार-प्रसार कीजिए, बहुत पुण्य मिलेगा।

वेदों का प्रादुर्भाव श्रीराम जी से बहुत पूर्व हो गया था इसका प्रमाण देखिए-वाल्मीकि रामायण में किष्किंधा काण्ड के द्वितीय सर्ग के श्लोक संख्या २७, २८ और २९ में जब सुग्रीव द्वारा श्री राम तथा ब्रह्मचारी लक्ष्मण के परिचय हेतु हनुमान जी को भेजा गया, तब हनुमान जी की वार्तालाप से प्रभावित श्रीराम, लक्ष्मण से कहते है-

तमभ्यभाष सौमित्र सुग्रीव सचिवं
कपिम्।
वाक्यज्ञं मधुरैर्वाक्यैः स्नेह
युक्तमरिन्दमम्।। (२७)
नानृग्वेद विनीतस्य नायजुर्वेद
धारिणः।
ना सामवेद-विदुषः
शक्यमेवंविभाषितुम् ।। (२८)
नूनं व्याकरणं कृत्स्नमनेन बहुधा
श्रुतम्।
बहु व्याहरताऽनेन न किंचिदप
शब्दितम् ।। (२९)

रामायण उद्धत इन श्लोकों में श्रीराम लक्ष्मण से यही कह रहे कि हे सौमित्र! ऐसा भाषण जो हनुमान जी ने किया, न तो ऋग्वेद की शिक्षा पाया हुआ, न यजुर्वेद को धारण किया हुआ न सामवेद को जानने वाला ऐसा भाषण कर सकता।

क्या अब भी आपको वेदों के श्रीराम से पूर्व होने में सन्देह है? यदि इन प्रमाणों के उपरान्त भी आपको अपनी भूल का आभास नहीं हुआ तो आप किसी भारतीय संस्कृति, सभ्यता, वेद आदि सत्य-शास्त्रों और रामायण, महाभारत जैसे इतिहास ग्रन्थों से द्वेष करने वालों से प्रेरित होकर ये अपभाषण कर रहे हैं। रामभद्राचार्य जी आप समझदार है, आचार्य है। इतने प्रमाण देकर आपको देव दयानन्द से परिचित भी करा दिया। आपसे विनती है कि अपनी आयु और ज्ञान का ध्यान करते हुए अपने अपभाषण में बोले शब्दों को वापिस ले और उन श्रोताओं से तथा जिन दयानन्द के भक्तों का हृदय-विदीर्ण आपने किया है और उनकी श्रद्धा को आघात पहुंचाया है। आप समूचे आर्यसमाज से माफी माँगिए। ईश्वर आपका कल्याण करें।

महर्षि दयानन्द पर टिप्पणी स्वामी रामभद्राचार्य की भारी भूल

-आचार्य रूपचन्द्र 'दीपक'

आर्य विद्वत् परिषद्, लखनऊ के अधीन स्वामी वेदामृतानन्द सरस्वती, डा० सत्यकाम आर्य एवं लेखक द्वारा २९ जुलाई, २०२४ को लखनऊ के प्रेस क्लब में प्रेस-वार्ता की गयी, जो स्वामी रामभद्राचार्य के निम्नलिखित चार कथनों के खण्डन-स्वरूप थी:-

(१) अष्टाध्यायी में राम-कथा है
(२) 'राम' शब्द वेदों में है
(३) 'अयोध्या' शब्द वेदों में है
(४) महर्षि दयानन्द ने रामायण एवं महाभारत को काल्पनिक बताया है, जो कि उन्होंने बड़ी भूल कर दी है।

अष्टाध्यायी से राम कथा

अष्टाध्यायी (१.३.८३) का सूत्र हैं-व्याङ्परिभ्यो रमः। 'रमु क्रीडायाम्' धातु का अर्थ हैंरमना।इससे 'अच्' प्रत्यय करके 'रमः' बनता है। 'ज्वलितिकसन्तेभ्यो णः' (३.१.१४०) से 'ण' प्रत्यय करके 'रामः' शब्द बनता है, जिसका अर्थ हैं रमने वाला। 'वि, आ, परि' उपसर्गों से शब्द बनते हैं-विरमति (रुकता है) आरमति (खेलता है) परिरमति (चारों ओर खेलता है)।अष्टाध्यायी में 'राम' शब्द की व्युत्पत्ति है इसकी व्याख्या को कोई कथा कहना चाहे तो भले ही कह ले। इसमें 'राम' पुरुष की कथा निश्चित रूप से नहीं है। प्रत्याहार सूत्रों अर्थात् 'अइउण्' आदि १४ सूत्रों में भी, जैसा कि स्वामी रामभद्राचार्य ने राम कथा बतायी है, ऐसी कथा नहीं है।

'राम' शब्द वेदों में

वेद सनातन हैं राम के पहले से हैं।वेदों में दशरथपुत्र या किसी व्यक्ति का नाम नहीं है। वेदों से शब्द लेकर नाम रखे गये हैं। राम शब्द वाले कुछ उदाहरण निम्नांकित हैं:-

(१) रामयन्नि दामनि (ऋ०: १.५६.३)
रामयत=रामं रमणं कारयितृ=शवः।
(२) रामीररुणैरपोर्णुते (ऋ०: २.३४.१२)
रामीः=आरामप्रदा रात्रीः (बहुवचन)। (३) राममस्थात् (सामवेद-१५४८)
राममू=रात्रि के अन्धकार को।

इस प्रकार 'राम' शब्द वेदों में अवश्य है किन्तु उसका अर्थ 'राम दाशरथि' नहीं है।

वेद में 'अयोध्या' शब्द

वेद में 'अयोध्या' शब्द है किन्तु इसका अर्थ राम की अयोध्या नगरी नहीं है।

अष्टाचक्रा नवद्वारा देवानां
पूरयोध्या।
(अथर्ववेद :१०.२.३१)

अर्थ :-

अष्टाचक्रा=यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान एवं समाधि नामक योग के आठ अंगों वाली।

नवद्वारा=दो नेत्र, दो कान, दो नासिका-छिद्र, एक मुख, आठवाँ मन और नवीं बुद्धि इन नौ द्वारों वाली।

अयोध्या=अ (नहीं), योध्या (युद्ध में पराजित करने योग्य)।

योग के आठ अंगों का पालन करने वाले तथा नौ द्वारों का संयम करने वाले योगी की काया अयोध्या है अर्थात् ऐसा योगी अजेय है। यह लक्षणा महर्षि दयानन्द पर सही बैठती है। 'अयोध्या' शब्द वेद में अवश्य है किन्तु इसका अर्थ रामचन्द्रजी की राजधानी अयोध्या नगरी नहीं है।

रामायण-महाभारत काल्पनिक नहीं

महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थप्रकाश में रामायण-महाभारत को शिक्षा के पाठ्यक्रम का अंग बनाया है। वे पठन-पाठन विधि में लिखते हैं कि अष्टाध्यायी, महाभाष्य, निघण्टु-निरुक्त, छन्दःशास्त्र एवं मनुस्मृति के बाद वाल्मीकि-रामायण और महाभारत पढ़ाएँ। (तृतीय समुल्लास)

अनेक श्लोक उद्धरित करते हैं:-

वक्ता श्रोता च दुर्लभः।
आत्मज्ञानं समारम्भस्तितिक्षा
धर्मनित्यता।
(चतुर्थ समुल्लास)

समालोचना करते हुए कहते हैं:-

(१) देखो! आर्यावर्तृत के राजपुरुषों की स्त्रियाँ धनुर्वेद अर्थात् युद्धविद्या भी अच्छी प्रकार जानती थीं क्योंकि जो न जानती होतीं तो कैकेयी दशरथ के साथ युद्ध में कैसे जा सकती? (तृतीय समुल्लास)

(२) अवतार किसलिए? उसके सामने कंस, रावण आदि एक कीड़ी के समान भी नहीं। (सप्तम समुल्लास)

(३) कौरव-पाण्डव पर्यन्त सब भूगोल के राजा यहाँ के शासन में चले थे। युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ में सब राजा थे। रावण यहाँ के अधीन था, जब विरुद्ध हो गया तो रामचन्द्र ने दण्ड देकर राज्य से नष्ट कर विभीषण को राज्य दिया था। (एकादश समुल्लास)

(४) योगवासिष्ठ किसी आधुनिक वेदान्ती का बनाया है। न वाल्मीकि, न वसिष्ठ, न रामचन्द्र का बनाया सुना है। ये सब वेदानुयायी थे और वेद से विरुद्ध न बना सकते थे। (एकादश समुल्लास)

उपर्युक्त प्रमाणों से स्पष्ट है कि महर्षि दयानन्द रामायण-महाभारत को काल्पनिक नहीं मानते। इस प्रकार, स्वामी रामभद्राचार्य ने गलतबयानी कर दी और महर्षि दयानन्द पर मिथ्या आरोपण कर स्वयं भारी भूल कर दी है।

पत्रकारों ने अन्त में प्रश्न किये, जिनके उत्तर भी दिये गये।

प्रश्न : क्या आप स्वामी रामभद्राचार्य जी के विरुद्ध न्यायालय जायेंगे?

उत्तर : आर्यसमाज करोड़ों आर्यों का विश्व-व्यापी संगठन है। इसमें सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दर्जनों प्रान्तीय सभाएँ एवं सैकड़ों जिला सभाएँ हैं।इन सभाओं ने उनसे क्षमायाचना करने को कहा, शास्त्रार्थ की चुनौती दी और कानूनी नोटिस भी दिया है। हम विद्वत् सभा के वार्तृताकार हैं और आपके माध्यम से जनता को यह स्पष्ट कर रहे हैं कि क्या सत्य है, क्या असत्य है और वस्तुतः किसने भूल की है?

प्रश्न : स्वामी रामभद्राचार्य सरीखे प्रसिद्ध विद्वान्, लाखों शिष्यों वाले और पूजित सन्त कैसे गम्भीर त्रुटि कर बैठते हैं?

उत्तर : जो लोग वेद और पुराण को एक समझते और पुराणों की गल्प कथाओं को वास्तविक मान लेते हैं, वे वेद ाने त्रुटियाँ कर बैठते हैं।

पढ़कर भी वेद के मर्म तक नहीं पहुँच पाते और जाने-अनजाने त्रुटियाँ कर बैठते हैं।

प्रश्न : स्वामी दयानन्द सरस्वती का इतने अधिक प्रश्नों से सम्बन्ध क्यों है?

उत्तर : महर्षि दयानन्द केवल वेदों पर बल देते हैं और पूर्ण बलपूर्वक बल देते हैं।महाभारत के बाद वेदों का पठन-पाठन घटकर लुप्त-सा हो गया।तब से वेद के पूर्ण प्रतिनिधि केवल दयानन्द हुए हैं। उन्होंने वेदों की हजार शिक्षाएँ समाज के समक्ष प्रस्तुत की हैं। लोगों ने मानी नहीं अथवा कम मानी हैं। लोग कम समझने या न समझने के कारण सही शिक्षाओं पर प्रश्न उठाते जा रहे हैं। महर्षि दयानन्द के वचनों में तो समाधान भरे हैं।

प्रश्न : योग किस प्रकार धर्म से जुड़ा है?

उत्तर : योग के आठ अंग हैं:- (१) यम अर्थात् अहिंसा-सत्य- अस्तेय-ब्रह्मचर्य-अपरिग्रहय इनका पालन करना सार्वजनिक धर्म है। (२) नियम अर्थात् शौच-सन्तोष-तप-स्वाध्याय-ईश्वरप्रणिधान इनका आचरण करना वैयक्तिक धर्म है। (३) आसन शारीरिक धर्म है। (४) प्राणायाम मानसिक एवं बौद्धिक धर्म है। (५) प्रत्याहार (मन एवम् इन्द्रियों का संयम) साधना धर्म है। शेष तीन अर्थात् धारणा, ध्यान एवं समाधि (ईश्वर में ध्यान लगाना एवम् उसका साक्षात्कार करना) मोक्ष धर्म है। मोक्ष वैदिक धर्म का लक्ष्य है और योग इस लक्ष्य की प्राप्ति का साधन है।

मो. ९८३९१८१६९०

राम भद्राचार्य जी माफी माँगे या आर्य विद्वानों से करें शास्त्रार्थ

-आचार्य रामज्ञानी आर्य

आर्य समाज के प्रवर्त्तक महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती पर रामायण तथा महाभारत को लेकर मिथ्या आरोप लगाया है, उसे आर्य जगत में आर्यो द्वारा घोर निन्दा की जाती है। समाज सुधारकों में सर्वोत्तम व वेदों के प्रखर विद्वान महर्षि दयानन्द सरस्वती अद्वितीय थे, जिन्होंने सनातन धर्म की रक्षा की है। वेद अपौरूषेय होने के कारण वेदों में राम और कृष्ण का वर्णन नहीं है। सत्यार्थ प्रकाश में महर्षि जी ने कहा है-रामायण और महाभारत को कल्पिक नहीं लिखा है, असत्य बयान देकर हिन्दू समाज को गुमतराह कर आर्य समाज से दूर करने का षडयंत्र किया जा रहा है। आर्य समाजियों द्वारा इसकी घोर निन्दा तथा तीव्र भर्त्सना की जाती है। मर्यादा पुरूषोत्तम भगवान राम तथा योगेश्वर श्री कृष्ण पर विधर्मियों ने पुस्तक लिख कर हमारे महापुरूषों का अपमान किया है, आर्य विद्वानों ने इन पुस्तकों के उत्तर में पुस्तक लिखकर, सनातन धर्म की मर्यादा को बचाया है। जैसे- ''कृष्ण तेरी गीता जलानी पड़ेगी।'' सीता का छिनाला आदि इसे विधर्मियों ने लिखा है। आर्य समाज के विद्वान पं० चमूपति आर्य ने एक पुस्तक लिखा-रंगीला रसूल इसे हैदराबाद के महाशय राजपाल सिंह ने प्रकाशित किया। लेखक में नाम दिया-दूध का दूध पानी का पानी। इसके निमित्त बलिदान होना पड़ा।

हैदराबाद के निजाम के मन्दिरों में पूजा-पाठ तथा घण्टा-घड़ियाल बजाने से मना कर दिया, मन्दिरों में ताला लगवा दिया। आर्यवीर दल तथा आर्य समाज के विद्वानों द्वारा सत्याग्रह आन्दोलन चलाया गया। निजाम को झुकना पड़ा, मन्दिरों का ताला खुलवा दिया। आर्य समाज चतुर्दिक, प्रत्येक क्षेत्र में सर्वोत्तम कार्य किया है। जो अवर्णनीय है। सन् १८५७ में स्वतंत्रता संग्राम की लड़ाई में लड़ने वाले सभी अमर शहीदों के प्रेरणा श्रोत महर्षि दयानन्द ही थे। पं० मन मोहन मालवीय जी सदैव कहा करते थे कि-

जब आर्य समाज दौड़ता है, तब हिन्दू समाज चलता है।

जब आर्य समाज बैठ जाता है, तब हिन्दू समाज सो जाता है।

जिस समय आर्य समाज सो जायेगा, उस समय इस धरती से हिन्दू समाज मिट जायेगा।

अन्त में, मैं कहना चाहता हूँ कि सुधारवादी आन्दोलन तथा समाज सुधारकों में भारत ही नहीं अपितु विश्व में, महर्षि दयानन्द सरस्वती का नाम उल्लेखनीय है।

भारत में इस्लामिक आतंकबाद के कारण और निवारण

-स्वामी हरीश्वरा नन्द सरस्वती

सुयोग्य लेखक श्री राकेश कुमार आर्य व्दारा उपरोक्त शीर्षक से रचित लघु पुस्तिका को (जिसको अमर स्वामी प्रकाशन व्दारा प्रकाशित किया गया है (प्रकाशक से आज्ञा लेने के बाद) आधार मानकर इस पुस्तक में से कुछ विन्दु चुनकर पाठकों के सामने संक्षेप में लेख के रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास कर रहा है। जो वर्तमान समय में पाठकों तक पहुंचाना बहुत आवश्यक होगया है।

भारत में आतंन्कबाद की समस्या कोई दस-बीस वर्ष पुरानी नहीं है, भारत में आतंन्कबाद की यह समस्या सदियों पुरानी है। इस्लाम के हमलों के पीछे, इस्लामिक मूलतत्वबाद प्रमुख कारण है। जिसमें दारुल इस्लाम और दारुल हरब के रूप में दुनियां को बांट कर देखा जाता है। इसमें इस्लाम को मानने वाला व्यक्ति मतान्ध होकर दुनियाँ को उपरोक्त खेमों ही देखना चाहता है। (१) दारुल इस्लामः जिन देशों का इस्लामी करण हो चुका है। (२) दारुल हरबः-जिन देशों में इस्लामी करण किया जाना बाकी है। इस सिध्दान्त को न मानने वाले को मौत या इसलाम में से एक को चुनने का फरमान सुना दिया जाता है। तब यह प्रवृति जुनून बन जाती है। उपरोक्त विचार के लिये इस्लाम में पवित्र मानी जाने वाली पुस्तक कुराने शरीफ पुस्तक ही प्रेरणा श्रोत बनती है। किसी विचारक ने कहा है कि जब तक कुरान रहेगा जब तक आतंकबाद रहेगा।

साम्यबादी लेखक और साहित्यकार हमें यह बताने का प्रयास करते हैं कि भारत में आतंकबाद कुछ अशिक्षित और बेरोजगार मुस्लिम युवकों की मानसिकता की उपज है, और कुछ नहीं। भारत में दाहर राजा से लेकर राजा जयपाल, राजा अनंन्गपाल, महाराजा पृथ्वीराज चौहान तक और इसी काल खंन्ड़ में सोमनाथ जैसे मंन्दिरों की लूट और उन्हें विसमार करने की असंख्य घटनायें, इसी आतंन्कबाद (मजहवी जुनून) के कारण ही तो सम्भव हुई थी। (हमें वर्तमान के अवलोकन के लिये अतीत को खगालना ही पड़ता है, क्यों कि वर्तमान पर अतीत की छाया अवश्य पड़ती है। यदि हम वर्तमान के साथ अतीत को न जोड़े तो समझ लो, कि हम आत्म विनास की ओर बढ़ रहे हैं।। यदि हम आज भी जेहादियों की कार्य-शेली को देखें तो धमन्तिरण, लूट-खसूट और काफिरों की हत्या, उनके धर्म स्थलों को तोड़ने की आज भी उसी प्रकार प्रक्रिया होरही हैं, जिस प्रकार ८वीं, ९वीं, १०वीं, ११वी और १२वीं शताब्दी में होती थी। लोग इतिहास की घटनाओं से शिक्षा नहीं लेते और रोते रहते हैं। अतः यदि आज भी हमारे समाज में इस्लामिक आतंन्कबाद सिर उठा रहा है, तो समझिये कि भारत ने इतिहास में से कुछ शिक्षा नहीं ली।

इस्लामिक विव्दानों, चिन्तकों और लेखकों से लेखक का निवेदन है, कि इतिहास के क्रूरता पूर्ण सत्य को वर्तमान के इस्लामिक आतंकवाद के रूप में पुनः उद्घाटित, प्रसारित व प्रचारित न होने दें। यदि आज आप किसी राष्ट्र को समाप्त करके उसके सारे निवासियों को यदि जबरदस्ती अपने सम्प्रदाय में दीक्षित करने का प्रयास करेंगें, तो समझ लो कि विश्व को आप भारी विनास की ओर ले जारहे हैं।

तारीख १३-३-२२ को गुजरात प्रान्त के अहमदाबाद शहर से प्रकाशित दिव्य भाष्कर समाचार पत्र में प्रकाशित एक लेख में समाचार है कि, साउदी अरब में एक दिन में ८१ लोगों को फाँसी दी गई। अलकायदा, १. ५. और हूती के विद्रोहीयों के सामने कार्यवाई हुई। यह लेख इस बात को सिध्द करता है कि, साउदी अरब सम्पूर्ण इस्लामिक राष्ट्र होने के बाबजूद भी, वहाँ पर आतंन्कबाद बिफरा हुआ है। इस बात से यह सिध्द होता है कि, इस्लाम को मानने वालो के दिमाग में जो प्रारम्भिक संन्स्कार सदियों से पड़े हुये कि, लूट-पाट, छीना-झपटी, महिलों के साथ अभद्र व्यवहार कर उन्हें अपमानित कर जबरदस्ती बलात्कार, जबरन जमीन हथिया लेना, ऐयासी भरी जिन्दगी गुजारना, जन्नत में जाने की कल्पना करना, जहाँ पर ७२-७२ हूरों यानी सुन्दर-सुन्दर महिलाओं का मिलना, और सुन्दर- सुन्दर कम उम्र लड़के यानी (गिलमे) आदि की मिलने की कोरी कल्पना के सपने इन धूर्त मौलवियों ने दिखाये है, इस से आगे इन आतंन्कबादियो कों कुछ दिखाई ही नहीं देता है। यहाँ पर भी लूत-पाट कर अयासी की जिन्दगी जीओ और मरने के बाद हूरों के साथ अयासी करो। इस्लाम को मानने वाले और आतंन्कबादियों का यही जीवन लक्ष्य होता है।

भारत की सरकारें यह तुष्टी करण का खेल-खेल रही हैं। मुसलमानों के प्रति तुष्टीकरण का राग अलाप रही हैं, तो ईसाइत के प्रतिपुष्टिकरण का खेल खेलती हैं। ईसाइयों से खिसिया कर कहती हैं कि, तुम्हीं ने तो हमें आधुनिकता सिखाई है। इस लिये तुम्हारी तो हर बात की हम पुष्टी करते हैं कि, आप जो कह रहे हैं वही सत्य है। इस तुष्टि और पुष्टि के खेल में भारतीय संस्कृति, सभ्यता, धर्म और इतिहास के प्रति सरकारें गम्भीर नही हैं। अब तक सरकारों ने हिन्दुओं के प्रति कुदृष्टि ही तो रखी। इस कुदृष्टि के कारण ही तो आतंन्कबाद को बढ़ावा मिला। इस प्रकार एक की तुष्टि, दूसरे की पुष्टि और तीसरे पर कुदृष्टि का नन्गा नाच सरकारें खेल रही हैं। जिसके परिणाम स्वरूप हिन्दू युवा वर्ग में अपने देश की संस्कृति, धर्म और इतिहास के प्रति उदासीनता का भाव पनप रहा है।

भारत में आतंन्कबाद फैलने के मुख्य मुख्य कारण-

१:- भारत में इस्लामिक आतंन्कबाद फैलने का प्रमुख कारण यह है कि हमने अपने अतीत से कोई शिक्षा नहीं ली। भारत में यदि प्रारम्भ में ही जो इस्लामिक आक्रमण कारी आये थे, उनके व्दारा मार-काट, लूट-पाट, महिलाओं के प्रति बुरी भावना, जबर दस्ती से भूमि पर जबरन कब्जा कर लेना, आदि के स्वभाव को पहुंचान कर यदि कोई ठोस कदम उठाये गये होते तो आतंन्क बाद भारत में नहीं फैलता।

२:-दूसरा प्रमुख कारण है, सरकार की तरफ से दिखाई जाने वाली छदम धर्म निरपेक्षता। सभी पंन्थों को अपनी पंथीय स्वतंत्रता कायम रखने का अधिकार हमारा संविधान देता है। यह अधिकार बना रहना चाहिये, हमें कोई आपति नहीं। किन्तु आपति तब होती है कि, जब हिन्दू विरोध का नाम धर्म निरपेक्षता मान लिया जाता है।

एक उदाहरण देकर समझाने का प्रयत्न कर रहा हूँ कि, यदि विहार राज्य में एक मुस्लिम को मुख्य मंत्री बनाने की बात की जाती है तो लोग उसे धर्म निरपेक्षता के नाम पर स्वीकार करते हैं। और कहते हैं कि ऐसा तो होना ही चाहिये। लेकिन जब जम्मू-काश्मीर में किसी हिन्दू को वहाँ का मुख्य मंत्री बनाने की बात आती है, तो तर्क में परिवर्तन आजाता है। तब कहा जाता है कि यह तो मुस्लिम वाहुल्य प्रान्त है। इस लिये यहाँ पर धर्म निरपेक्षता के नाम पर वहाँ पर मुस्लिम मुख्य मंत्री ही होना चाहिये।

हरियाना में मेवात जिला और केरल का मल्लपुरम मुस्लिम वाहुल्य होने के कारण वहाँ का जिला अधिकारी, और एस एस पी मुस्लिम ही बनाये जाते हैं। इन जगहों पर हिन्दू अल्प संख्यकों के उपर क्या-क्या नहीं होरहा है, ये तो वहाँ के हिन्दू ही बता सकते है, मगर वे अपने ऊपर होरहे अत्याचारों को बताने तक की भी उन्हें स्वतंत्र नहीं हैं।

मुस्लिम विव्दानों का भी मानना है कि, भारत में सैक्यूलरिज्म तभी तक जीवित है, जब तक कि यह हिन्दू वाहुल्य है। जिस दिन यहाँ हिन्दू अल्संख्यक होजायगा, उसी दिन यहाँ सम्प्रदाय सापेक्ष राज्य की नीव रख दी जायगी। तब उस सम्प्रदाय साक्षेप राज्य में हिन्दुओं के लिये कोई मौलिक अधिकार नहीं रहेगें।

जहाँ-जहाँ पर मुस्लिम अल्पसंख्यक हैं, वहाँ-वहाँ पर वे वहू संख्यक होने का प्रयास कर रहे हैं। जैसे ही वहाँ पर वे वहुसंख्यक होते हैं, तत्काल अलग जिले की माँग कर देते हैं। और धीरे-धीरे वे अपना अलग राज्य की माँग की तरफ बढ़ते हैं। सन १८७६ में अफगानिस्थान इसी आधार पर प्रथक हुआ। फिर इसी बात को आधार मान कर दो पाकिस्तान बने, एक पश्चिमी पाकिस्तान दूसरा पूर्वी पाकिस्तान। जैसे कि मेवात और मल्लपुरम बन रहे हैं। इस कारण का निवारण ये है कि, देश में साम्प्रदायिक आधार पर जिले या प्रान्त का निर्माण न हो।

३:-इस्लामिक आतंन्कबाद का तीसरा कारण भारत के संविधान के अनुच्छेद २९ व ३० है। जो कि अल्प संख्यकों को अपनी शैक्षणिक संस्थायें खोलने की अनुमति देते है। इन अनुच्छेदों के रहते हुये, हम अपने देश में समान शिक्षा प्रणाली लागू नहीं कर सकते हैं। जो बच्चे मदरसों में शिक्षा ले रहे हैं, वे मजहवी कट्टरता में रचे-बसे होकर बाहर निकल रहे हैं। वे बास्तव में नैतिक रूप से मानवीय आचरण को शुध्द और पवित्र करने वाली शिक्षा से बंचित रह जाते हैं। हमारी सरकार को चाहिये कि मदरसा शिक्षा प्रणाली को तत्काल समाप्त करे और समान शिक्षा प्रणाली को लागू करे। जिस से मानवता का विकास हो और दानवता का नास हो। और संविधान की उपरोक्त दोंनों धाराओं को तत्काल असर से समाप्त किया जाना चाहिये।

४:- भारत में आतंन्कबाद का चौथा कारण है, नेताओं का मिथ्या आचरण। नेता हमें बताते हैं कि भारत में आतंन्कबाद गरीबी, अशिक्षा और वे रोजगारी के कारण है। कुछ दिग्भ्रमित युवा हैं, जो ऐसा कर रहे हैं। ये सरासर झूठ है। क्यों कि कभी भी कोई, गरीब, अशिक्षित, वे रोजगार व्यक्ति किसी विचार धारा के मूल तत्वबाद को समझ ही नहीं सकता है। वह अपनी जीविका की चक्की में इतना पिसता रहता है कि, उसे कहीं और देखने-सुन ने का समय ही नहीं मिलता है।

५:-भारत में आतंन्कवाद का पाँचवा कारण यह है कि, हमारे नेता आतंकवादियों के प्रति मानवीय दृष्टिकोण रखते हैं। आतंककियों का आतिथ्य सत्कार किया जाता है। मानवाधिकारवादी संगठन उनके प्रति दया और करुणा का भाव रखते हैं। इस से इन आतंन्क बादियों की दानवता सम्मानित होती है और मानवता अपमानित होती है। इस लिये हमें यह करना चाहिये कि, समाज की मुख्य धारा को दुष्प्रभावित करने वाले व्यक्तियों या व्यक्ति समूहों, या संन्गठनों या दलो को दानव की संज्ञा से सम्बोधित किया जाय, और उनके लिये यह स्पष्ट कर दिया जाय कि, उन्हें किसी भी प्रकार के मानवाधिकारों के उपयोग का कोई अधिकार नहीं होगा। लेखक के मतानुसार इस मानव अधिकार पंन्च को तत्काल समाप्त कर देना चाहिये। साथ ही लघुमती पंन्च को भी।

६:-देश में इस्लामिक आतंन्क बाद के लिये एक छटा प्रमुख कारण है, देश में गठबन्धन की राजनीति। इस प्रकार की सरकारें दबाव में कार्य करती हैं। मुस्लिम मतों के लालची राज नेता और राजनैतिक दल सरकार की कठोरता का प्रदर्शन नहीं कर सकते। देश में अभी तक जितनी भी सरकारें आई वे सभी तुष्टी करण की राजनीति में लग गई। भाजपा भी अपनी मूल विचार धारा से भटक गई। और काग्रेस की भाँति मुस्लिम तुष्टी करण की नीति में लग गई। गठबन्दन की सरकारों में बड़े दल की नीति नहीं अपितु गठबन्धन का मिनीमम एजेंन्ड़ा की नीति लागू होने लगती है। इस से सरकार की इच्छा शक्ति दुर्बल हो जाती है। सरकार का नेता मुख्य मंत्री या प्रधान मंत्री सरकार चलाने के लिये सरकार चलाता है, देश चलाने के लिये सरकार नहीं चलाता।

देश की जनता को चाहिये कि, वह गठबन्धन के लिये अपने मत का प्रयोग न करे, अपितु एक दल और एक व्यक्ति के लिये मतदान करे। राष्टवादी विचार धारा को प्रवल करने के लिये क्षेत्रीय दलों का वहिष्कार करे। और जाति, पंन्थ, सम्प्रदाय, भाषा और क्षेत्र को अस्वीकार कर दिया जाय।

७:- भारत में इस्लामिक आतंक बाद बिफरने का एक सातवाँ कारण यह भी है कि, साम्प्रदायिक आधार पर आरक्षण देना। इस से देश में समान नागरिक संहिता की स्थापना नहीं हो सकती। साम्प्रदायिक आधार पर आरक्षण देना देश के लिये राष्ट्रघाती सिध्द होगा, यह मुस्लिमों के भी हित में नहीं होगा। यदि आरक्षण देना ही है, तो आर्थिक आधार पर पिछड़े समाज को राजकीय संरक्षण देना चाहिये। न कि पंन्थीय आधार पर।

यदि हम उपरोक्त सात बिन्दुओं पर भी एक होजाय तो भारत में से आतंन्कबाद का सफाया होने में देर नहीं लगेगी। मुस्लिम लोग भी इस कार्य में सहयोगी बने राष्ट्र हित में ऐसी लेखक की अपील भी है, अनुरोध भी।

आतंन्कवाद निवारण कैसे हो?

१:-देश में एक समान शिक्षा प्रणाली लागू की जाय। २:-शिक्षा मानवता का विकास करने वाली हो ३:-समान नागरिक संहिता लागू की जाय। ४ जाति, और पंन्थ के आधार पर आरक्ष ण की व्यवस्था न की जाय। ५: देश के सभी नागरिकों को समान मौलिक अधिकार प्रदान कर वास्तविक पंन्थ निरपेक्षता अपनाई जाय। ६:-वोटों की राजनीति के लिये मुस्लिमों का तुष्टीकरण बन्द होना चाहिये। ७:-आतंन्कबाद को लेकर एक राष्ट्रीय रण नीति बनाई जाय, जिस पर सभी राजनैतिक दलों की राय ली जाय। ८:-पाकिस्तान स्थित सभी आतंकी शिविरो कों नष्ट किया जाय। ९:-आतंन्कबाद विरोधी कड़े कानूनों का निर्माण हो, और फिर उनका कठोरता से पालन हो।

वैदिक सन्ध्या व पद्यानुवाद

-पंडित चमूपति

गुरु मन्त्र

ओ३म् भूर्भवः स्वः। तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्

प्रेरक प्रभु प्रेरणा करिए (टेक)
प्राणपति जग के रखवारे
जगजीवन (औ) जग से न्यारे
सुखस्वरूप सब संकट हरिए।
तेजरुप तव ध्यान धरें हम
बुद्धि प्रेरिए जीवन भरिए।

आचमन

ओं शन्नो देवीरभिष्टयऽआपो भवन्तु पीतये।
शंयोरभि स्रवन्तु नः।। (यजु. ३६/१२)
विश्व व्यापिनी देवी सुख बरसाना।
प्रेम प्यास है चहूँ दिश इसे बुझानां

इन्द्रिय स्पर्श

ओं वाक् वाक्। ओं प्राणः प्राणः। ओं चक्षुश्चक्षुः।
ओं श्रोत्रं श्रोत्रम्। ओं नाभिः। ओं हृदयम्। ओं कण्ठः।
ओं शिरः। ओं बाहुभ्यां यशोबलम्। ओं करतल करपृष्ठे।
वाणी मम यथार्थ वाणी हो।
प्राण-प्राण गुण अभिमानी हों
आँख-आँख सुभ कान-कान सुभ।
नाभि शक्ति का हो निधान सुभं
हृदय हृष्ट हो कण्ठ शुद्ध हो।
शीर्ष शक्ति सम्पन्न बुद्ध हों
सबल बाहु शुभ यश फैलायें।
हाथ चुस्त हो कर्म कमायें

मार्जन

ओ३म् भूः पुनातु शिरसि। ओं भुवः पुनातु नेत्रयोः।
ओं स्वः पुनातु कण्ठे। ओं महः पुनातु हृदये।
ओं जनः पुनातु नाभ्याम्। ओं तपः पुनातु पादयोः।
ओं सत्यं पुनातु पुनश्शिरसि। ओं खं ब्रह्म पुनातु सर्वत्र।
मम चित्त शोधो शोधन हारे। (टेक)
शीर्ष शुद्ध कर ज्ञान बढ़ाओं
नेत्र स्वच्छ कर सुपथ दिखाओ।
मल नाशो मल नाशन हारें
कोमल कण्ठ सरस स्वरमय हो।
महा प्रभो मम महा हृदय हो
शीश शुद्ध हो सत्य विचारे
तपोनिधे मम पग-पग प्रेरो
नाभि स्वच्छ कर शिशु मुख हेरो
जनक जगज्जन सरजन हारें
रहे स्वच्छता निज शरीर में
अंग अंग में चीर चीर में
घट-घट व्यापो व्यापनहारें

प्राणायाम

ओ३म् भूः। ओं भुवः। ओं स्वः। ओं महः। ओं जनः।
ओं तपः। ओं सत्यम्।।
(तैत्ति. प्रपा. १ अनु० २७)
प्रिय प्रभु तुम हो प्राण हमारे।
प्यारे-प्यारे न्यारे-न्यारे।।
व्यापक सुख हो जगत जनक हो।
तपः स्वस्वरूप सत्य साधक हों

अघमर्षन

ओ३म् ऋतंच
सत्यंचाभीद्धात्तपसोऽअध्यजायत।
ततो रात्र्यजायत ततः समुद्रो
अर्णवः।।१।।
समुद्रादर्णवादधि संवत्सरोऽअजायत।
अहोरात्राणि विदधद्विश्वस्य मिषतो
वशी।।२।।
सूर्याचन्द्रमसौ धाता यथापूर्वकल्पयत्।
दिवं च पृथिवीं चान्तरिक्षमथो स्वः।।३।।
(ऋग्वेद १०/१९/१-३)
अचरज महिमा प्रभु रचना की।
चहूँ दिश तपी सदा भव भट्टीं
निशिदिन चलते नियम निरन्तर।
सखलन होता नही कहीं बाल भरं
अभी सृष्टि थी अभी प्रलय हैं।
लो फिर सागर विप्लवमय हैं
ऋतु ऋतु की फिर बारी आयो।
समय शृंखला सारी आयों
विश्ववशी ने निजस्वभाव से।
रचे रैन दिन सहज भाव सें
सूर्य चन्द्र पृथिवी औ तारे।
अन्तरिक्ष के गोलक सारें
विधि-विधि फिर अनादि से रचता।
न्याय नियम से अणु नहीं बचतां

आचमन (दूसरी बार)

ओं शन्नो देवीरभिष्टयऽआपो भवन्तु पीतये।
शंयोरभि स्रवन्तु नः (यजु० ३६/१२)
विश्व व्यापिनी देवी सुख बरसाना।
प्रेम प्यास है चहूँ दिश इसे बुझानां

गुरु मन्त्र (दूसरी बार)

ओ३म् भूर्भवः स्वः। तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्

प्रेरक प्रभु प्रेरणा करिए (टेक)
प्राणपति जग के रखवारे
जगजीवन (औ) जग से न्यारे
सुखस्वरूप सब संकट हरिए।
तेजरुप तव ध्यान धरें हम
बुद्धि प्रेरिए जीवन भरिए।

मनसा परिक्रमा

ओ३म् प्राची दिगग्निरधिपतिरसितो रक्षितादित्या इषवः।
तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु।
योऽस्मान्द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः।।१।।

ओ...म् दक्षिणा

दिगिन्द्रोऽधिपतिस्तिरश्चिराजी रक्षिता पितर इषवः।
तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नर्मो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु।
योऽस्मान्द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः।।२।।

ओ३म् प्रतीची दिग्वरुणोऽधिपतिः पृदाकू रक्षिताऽन्नमिषवः।
तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु।
योऽस्मान्द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः।।३।।

ओ३म् उदीची दिक्सोमोऽधिपतिः स्वजो रक्षिताऽशनिरिषवः।
तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु।
योऽस्मान्द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भै दध्मः।।४।।

ओ३म् ध्रुवा दिग्विष्णुरधिपतिः कल्माषग्रीवो रक्षिता वीरुध इषवः।
तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु।
योऽस्मान्द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भै दध्मः।।५।।

ओ३म् ध्रुवा दिग् बृहस्पतिरधिपतिः श्वित्रो रक्षिता वर्षमिषवः।
तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु।
योऽस्मान्द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः।।६।।
(अथर्ववेद ३।२७।१-६)
आगे आगे अग्नि अग्रणी
किरण बाण धर तिमिर हरधनी
सदा मुक्त, प्रभु राज तुम्हारा
नम्र नमस्ते अहो हमारा
अहो महेश्वर नमो नमस्ते
अहो वाणधर नमो नमस्ते
जो जन हमसे द्वेष कर रहे
या जिनपर हम दोष धर रहे
न्याय नेत्र के सब समक्ष हों
दण्ड जम्भ के दुष्ट भख भक्ष हों
दाएँ हाथ तुम इन्द्र दयानिधे
निज वाण धर वक्र वेधते
सकल विश्व पर राज तुम्हारा
पृष्ठ भाग में वरुण वरेश्वर
हिंस्र शत्रु हर अन्न बाण धर
सकल विश्व प्रभु राज तुम्हारा
बाए हाथ तुम सोम सुधाकर
सुखद स्वयं भू अशनि बाण धर
सकल विश्व प्रभु राज तुम्हारां
विष्णु तुम हो ध्रुव रखवारे
बेलें बूटे बाण तुम्हारे
हरा भरा निज राज तुम्हारां
तुम्हीं बृहस्पति छत्र हमारे
वृष्टि बाण धर रोग संहारे
विमल विभो सब राज तुम्हारां

उपस्थान

ओ३म् उद्वयन्तमसंस्परि स्वः पश्यन्त ऽउत्तरम्।
देवं देवत्रा सूर्यमर्गन्म ज्योतिंरुत्तमम्।।१।।
(यजुर्वेद ३५/१४)
ओम् उदुत्यजातवेदसं देवं वहन्ति केतवः।
दृशे विश्वाय सूर्य्यम्।।२।। (यजुर्वेद ३३/३१)
ओम् चित्रं देवानामुदगादीकं चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्याग्नेः।
आप्रा द्यावापृथिवीऽअन्तरिक्षं सूर्यऽआत्मा जगतस्तस्थुषश्च स्वाहा।।३।। (यजुर्वेद ७/४२)
ओम् तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत्।
पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शतं।
शृणुयाम शरदः शतं प्रब्रवाम शरदः शतमदीनाः स्याम शरदः शतं भूयश्च शरदः शतात्।।४।।
(यजुर्वेद ३६/२४)
अन्धकार से वृत्ति मोड़कर
तामस तम का मार्ग छोडकर
चलो देव के दर्शन करने
लख छवि सुखस्वरूप जी भरने
देवराज देवों में उत्तम
सुगम सुदर्शन अद्भुत अनुपम
भवन-भवन झण्डे फहराते
प्रभु छवि कर संकेत दिखाते
देव विश्ववत् विश्व विकाशी
कर दर्शन-दर्शन अभिलाषी
देव संग मङ्गल मना रहे
मित्र वरुण और अग्नि गा रहे
सजग ज्योति से ज्योति पा रहे
विश्वचक्षु शुभ द्युति धारी है।
आत्मकाम कर सफल भुवन को
अंतरिक्ष को धरा गगन को
सकल सृष्टि प्रभु हिय प्यारी हैं
चक्षु समान देव हितकारी
सर्व समक्ष अनादि बिहारी
दर्शन हो सौ वर्ष तुम्हारा
जीवन हो कृतकार्य हमारा
सौ वर्ष तक सुनें सुनावें
सौ वर्ष तक प्रभु गुण गावें
रहें स्वतन्त्र न दीन कभी हों
शुद्ध रक्त यों शत्त रहें हम
सौ वर्ष से अधिक जियें हम

गुरु मन्त्र (तीसरी बार)

ओ३म् भूर्भवः स्वः। तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्

प्रेरक प्रभु प्रेरणा करिए (टेक)
प्राणपति जग के रखवारे
जगजीवन (औ) जग से न्यारे
सुखस्वरूप सब संकट हरिए।
तेजरुप तव ध्यान धरें हम
बुद्धि प्रेरिए जीवन भरिए।

समर्पण

ओ३म् नमः शम्भवाय च मयोभवाय च।
नमः शङ्कराय च मयस्कराय च।
नमः शिवाय च शिवतराय चं (यजुर्वेद १६/४१)
सुखस्वरूप प्रभो नमो नमस्ते
शांतिरूप प्रभु नमो नमस्ते
नमो नमस्ते मंगलकारी
नमो नमस्ते सुख संचारी
सुखकर अनुपम नमो नमस्ते
शंकर शिवतम नमो नमस्ते

●●●

उपनिषद में ईश्वर का विवरण

यद्वाचाऽनभ्युदितं, येन वागभ्युद्यते।
तदेव ब्रह्म त्वं विद्धि, नेदं यदिदमुपासते।।
(केन० १/४)

जो वाणी द्वारा प्रकाशित नहीं होता, जिससे वाणी का प्रकाश होता है, उसी को तू ब्रह्म जान ।जिसका वाणी से सेवन किया जाता जाता है, वह ब्रह्म नहीं है ।

यन्मनसा न मनुते, येनाहुर्मनो मतम्।
तदेव ब्रह्म त्वं विद्धि, नेदं यदिदमुपासते।। (केन० १/५)

जिसका मन से मनन नहीं किया जाता, जिसकी शक्ति से मन मनन करता है, उसी को तू ब्रह्म जान ।जिसका मन से मनन किया जाता है, वह ब्रह्म नहीं है ।

यच्चक्षुषा न पश्यति, येन चक्षूंषि पश्यन्ति ।
तदेव ब्रह्म त्वं विद्धि, नेदं यदिदमुपासते ।। (केन. १/६)

जो आंख से नहीं देखा जाता, जिसकी शक्ति से आँख देखती है, उसी को तू ब्रह्म जान । जो आँख से देखा जाता है, वह ब्रह्म नहीं है यच्छ्रोत्रेण न श्रृणोति, येन श्रोत्रमिदं श्रुतम्।

तदेव ब्रह्म त्वं विद्धि, नेदं यदिदमुपासते ।। (केन. १/७)

जो कान से नहीं सुना जाता, जिससे कान सुनता है, उसी को तू ब्रह्म जान । जो कान से सुना जाता है, वह ब्रह्म नहीं है।।

यत्प्राणेन न प्राणिति, येन प्राणः प्रणीयते।
तदेव ब्रह्म त्वं विद्धि, नेदं यदिदमुपासते।। (केन० १/८)

जो प्राण से प्राण के व्यापार में नहीं आता, जिससे प्राण अपना व्यापार करता है, उसी को तू ब्रह्म जान ।जो प्राण के व्यापार में आता है, वह ब्रह्म नहीं है।

यह सुस्पष्ट शब्दों में बताया गया है कि परमात्मा आकार रहित होने के कारण इन्द्रियों द्वारा ग्रहण करने की वस्तु नहीं है । यदि इन्द्रियाँ समर्थ होती तो यह नहीं कहा जाता : --

यतो वाचो निवर्तन्ते इन्द्रियाणि मनसा सह।

जहाँ से मन के साथ इन्द्रियाँ और वाणी बिना उसको प्राप्त किये ही लौट आते हैं । भला चेतन निराकार परमात्मा को ये जड़ इन्द्रियां प्राप्त भी कैसे कर सकती है ?

अशरीरं शरीरेष्वनवस्थेष्ववस्थितम्।
महान्तं विभुमात्मानं मत्वा धीरो न शोचति।। (कठोपनिषद १/२/२२)

वह परमात्मा लोगों के अस्थिर शरीरों में रहकर भी शरीर-रहित हुआ स्थित है । उस महान् विभु/सर्वव्यापी परमात्मा को जानकर धीरपुरुष शोक नहीं करता।

एष सर्वेषु भूतेषु गूढ़ोऽऽत्मा न प्रकाशते ।
दृश्यते त्वग्र्यया बुद्ध्या सूक्ष्मया सूक्ष्मदर्शिभिः।। (कठोपनिषद १/३/१२)

सभी भूतों अर्थात् प्राणियों और वस्तुओं में छिपा हुआ, यह परमात्मा चर्म-चक्षुओं से प्रत्यक्ष नहीं होता । सूक्ष्मदर्शी पुरुष ध्यान-योग लगाकर, सूक्ष्म और तीक्ष्ण बुद्धि द्वारा उसे देखते हैं।

यत्तदद्रेश्यमग्राह्यमगोत्रमवर्णमक्षुः श्रोत्रं तदपाणिपादम् ।
नित्यं विभुं सर्वगतं सुसूक्ष्मं तदव्ययं यद्भूतयोनिं परिपश्यन्ति धीराः।।
(मुण्डकोपनिषद १/१/६)

वह जो परमात्मा अदृश्य, अग्राह्य, अगोत्र, अवर्ण, और चक्षु, श्रोत्र इत्यादि से रहित है, एवं हाथ-पैर इत्यादि कर्मेन्द्रियों से भी रहित है, वह नित्य, विभु, सर्वगत, अत्यन्त सूक्ष्म, अव्यय है तथा समस्त भूतों का कारण है, उसे धीर पुरुष सब ओर देखते हैं।

दिव्यो ह्यमूर्तः पुरुषः स बाह्याभ्यन्तरो ह्यजः।
अप्राणो ह्यमनाः शुभ्रो ह्यक्षरात् परतः परः।। (मुण्डकोपनिषद २/१/२)

दिव्य और अमूर्त वह पुरुष, बाहर एवं भीतर होकर भी जन्मादि से रहित है ।वह प्राण-रहित और मन-रहित और सर्वथा विशुद्ध है, एवं अक्षर/अविनाशी प्रकृति और जीव से भी सूक्ष्म वा श्रेष्ठ है।

न चक्षुषा गृह्यते नापि वाचा नान्यैर्देवैस्तपसा कर्मणा वा।
ज्ञानप्रसादेन विशुद्धसत्त्वस्ततस्तु तं पश्यते निष्कलं ध्यायमानः।।
(मुण्डकोपनिषद ३/१/८)

वह ब्रह्म न नेत्र से ग्रहण किया जा सकता है, न ही वाणी से, न अन्य इन्द्रियों से, न केवल तप अथवा केवल कर्म से ही ।ज्ञान के प्रसाद से विशुद्ध चित्तवाला ही ध्यान करता हुआ उस कलारहित ब्रह्म को साक्षात्कार करता है।

सत्येन लभ्यस्तपसा ह्येष आत्मा सम्यग्ज्ञानेन ब्रह्मचर्येण नित्यम्।
अन्तःशरीरे ज्योतिर्मयो हि शुभ्रो यं पश्यन्ति यतयः क्षीणदोषाः।।
(मुण्डकोपनिषद ३/१/५)

यह परमात्मा सदैव ही सत्य, तप, सम्यक् ज्ञान और ब्रह्मचर्य के द्वारा प्राप्त किया जा सकता है ।जिनके दोष क्षीण हो गए हैं, वे यत्नशील पुरुष शरीर के भीतर ही इस ज्योतिर्मय शुभ्र परमात्मा को देखते हैं।

सर्वव्यापिनमात्मानं क्षीरे सर्पिरिवार्पितम्।
आत्मविद्यातपोमूलं तद्ब्रह्मोपनिषत् परम्।।
(श्वेताश्वतरोपनिषद १/१६)

वह सर्वव्यापी परमात्मा दूध में घी की भाँति सबमें विद्यमान है, और आत्मविद्या एवं तप उसकी प्राप्ति का मूल है।वह उपनिषद में कहा गया परम् ब्रह्म है।

सर्वेन्द्रियगुणाभासं सर्वेन्द्रियविवर्जितम्।
सर्वस्य प्रभुमीशानं सर्वस्य शरणं बृहत्।।
(श्वेताश्वतरोपनिषद ३/१७)

वह नेत्र, कर्ण, हाथ-पैर आदि समस्त इन्द्रियों से रहित होकर भी समस्त इन्द्रियों के विषय-गुणों को जानने वाला है अर्थात बिना इंद्रियों के वह सब इंद्रियों के देखना, सुनना आदि कार्यों को कर लेता है । वह सबका स्वामी, नियन्ता और सबका बृहद् आश्रय है।

अपाणिपादो जवनो ग्रहीता पश्यत्यचक्षुः स शृणोत्यकर्णः।
स वेत्ति वेद्यं न च तस्यास्ति वेत्ता तमाहुरग्र्यं पुरुषं महान्तम्।।
(श्वेताश्वतरोपनिषद ३/१९)

वह बिना हाथ के भी सबका ग्रहण करने वाला, पैर से रहित होकर भी

क्रमशः.....८ पर

पंजी०सं० आर.एन.आई.-२२४१/५७ -आर्यमित्र आर्यमित्र आर्यमित्र ०१ व ०८ अगस्त, २०२४ पोस्टल रजि.जी.पी.ओ. लखनऊ/एन.पी.-१४/२०१६-२१ एक प्रति ₹ ५.००

आर्य मित्र

नारायण स्वामी भवन, ५-मीराबाई मार्ग, लखनऊ दूर./फैक्सः ०५२२-२२८६३२८
प्रधान-०९४१२६७८५७१, मंत्री-०९४१५३६५५७६, सम्पादक-९४५१८८१९७७
ई.मेल-apsabhaup86@gmail.com

सेवा में,

.....

.....

महर्षि दयानन्द सरस्वती पर स्वामी राम भद्राचार्य द्वारा लगाये गये मिथ्या आरोप के विरोध में जिला आर्य प्रतिनिधि सभा लखनऊ की प्रेस वर्ता

विगत दिनों श्री तुलसी पीठ सेवा न्यास चित्रकूट (म.प्र.) के आचार्य स्वामी रामभद्राचार्य ने महर्षि दयानन्द सरस्वती के विषय में एक अनर्गल व असत्य वक्तव्य देकर आर्यों की भावनाओं को आहत कर दिया। उन्होंने कहा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती ने एक बड़ी भूल कर दी। उन्होंने रामायण व महाभारत को कल्पित माना है। वह यही नहीं रूके बल्कि पाणिनी के सूत्रों में रामकथा तथा वेद के प्रत्येक मंत्र में रामकथा के बीज दिखाने का सामर्थ्य बताया।

उनके इस वक्तव्य से विश्व के आर्यों में उबाल आ गया। सोशल मीडिया से लेकर लिखित पत्रों के द्वारा आर्यजनों ने अपना विरोध प्रकट करना शुरू कर दिया।

इसी परिप्रेक्ष्य में दिनांक २७ जुलाई, २०२४ को जिला आर्य प्रतिनिधि सभा लखनऊ द्वारा प्रेस क्लब हजरतगंज में प्रेस वार्ता का कार्यक्रम जिला सभा प्रधाना डॉ. निष्ठाविद्यालंकार की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ।

प्रेस वार्ता में डॉ. निष्ठा जी ने स्वामी रामभद्राचार्य के वक्तव्य का जोरदार खंडन करते हुए इसे अनर्गल, आधारहीन व असत्य बताया। उन्होंने स्वामी राम भद्राचार्य को इस विषय पर शास्त्रार्थ की खुली चुनौती दी।

इस अवसर पर श्रीमती सुमन पाण्डेय (मंत्री), श्रीमती उर्मिला जी, आचार्य विमल किशोर आर्य, सर्वश्री मनीष आर्य, अतुल सिंह, भोला तिवारी, काशी प्रसाद शास्त्री, कुबरे भण्डारी (पूर्व विधायक) प्रेम शंकर मौर्य, आर.डी. वर्मा आदि ने भी अपने विचार रखे व तीव्र शब्दों में श्री राम भद्राचार्य के उस कथन की निन्दा की।

श्रीराम भद्राचार्य के दिये गये उक्त कथन के विरोध में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली, परोपकारिणी सभा अजमेर (राजस्थान) व प्रदेशों की अनेक प्रतिनिधि सभाओं, आर्य समाजों शिक्षण संस्थाओं, गुरूकुलों आदि ने पत्र भेज कर अपना विरोध प्रकट किया है तथा शास्त्रार्थ की चुनौती दी है।

बंगलौर में हुआ सेहत का खजाना का विमोचन व सम्मान

आर्य समाज मारतहल्ली बंगलौर द्वारा स्वामी रामभद्राचार्य जी कानून नोटिस भेजा गयाः-

सुप्रसिद्ध लेखक व स्वास्थ्य विष्लेशक वैद्य श्वेत केतु शर्मा द्वारा स्वरचित प्रकृति के विभिन्न पर आधारित ६० अध्याय से परिपूर्ण २५० पृष्ठ की पुस्तक का भव्य विमोचन आर्य समाज मारतहल्ली बंगलौर के संस्थापक कर्मठ समाज सेवी व महर्षि दयानंद सरस्वती के विचारों को जन जन तक पहुंचाने वाले फकीरे दयानंद श्रीयुत एस पी कुमार साहब के कर कमलों द्वारा सम्पन्न किया गया ,साथ में आर्य समाज के प्रधान कर्नल एस. पी. शर्मा, मंत्री अभिमन्यु जी, धर्माचार्य आचार्य राम कुमार, वायुसेना में कार्यरत उमाकांत मिश्रा ,वेद प्रचार मन्डल बरेली की संस्थापक सदस्या श्री मती नूतन कोचर जी के साथ भव्यता विमोचन सम्पन्न किया गया।

इस अवसर पर आर्य समाज के धर्माचार्य आचार्य राम कुमार जी ने लेखक वैद्य श्वेत केतु शर्मा का स्वागत अभिनन्दन किया।वेद प्रचार मन्डल बरेली के तत्वावधान में आयोजित इस समारोह में वेद प्रचार मन्डल बरेली के संयोजक डा श्वेत केतु शर्मा ने आर्य समाज मारतहल्ली बंगलौर के संस्थापक फकीरे दयानंद श्रीयुत एस पी कुमार साहब का शाल उढ़ा कर अभिनंदन किया साथ में उमाकांत मिश्रा व सदस्या श्री मती नूतन कोचर जी ने स्मृति चिन्ह भेंट कर भव्यता से अभिनंदन किया गया।

इस अवसर पर वेद प्रचार मन्डल बरेली के द्वारा श्री मती उषा शर्मा व नीलम शर्मा ने वरिष्ठ सदस्या श्रीमती नूतन कोचर को उनकी विशेष कार्यों पर शाल उढ़ा कर अभिनंदन किया तथा इं ज्योतिर्वसु शर्मा व इं सुरभी शर्मा ने स्मृति चिन्ह भेंट कर सम्मानित किया।

कारगिल युद्ध में शहीद दिवस पर वीर शहीदों को श्रद्धांजलि प्रदान की गई तथा उनकी वीरता की गाथाओं को गौरवान्वित करने हेतु आर्य समाज मारतहल्ली बंगलौर व वेद प्रचार मन्डल बरेली ने वायुसेना में कार्यरत उमाकांत मिश्रा को भी सम्मानित करते हुए स्मृति चिन्ह भेंट किया गया।

इस अवसर पर फकीरे दयानंद श्रीयुत एस. पी. कुमार साहब ने पुस्तक की विशेषताओं को उजागर करते हुए जन सामान्य के प्रति उपयोग व शारीरिक-मानसिक शान्ति के लिए महत्वपूर्ण बताया, महर्षि दयानंद सरस्वती के वाक्य शारीरिक आत्मिक व सामाजिक उन्नति करने के वाक्य की विस्तृत व्याख्या करते हुए शारिरिक स्वास्थ्य के विना समाज व राष्ट्र का विकास संभव नहीं को विस्तार से वर्णन किया।

इससे पूर्व साप्ताहिक सत्संग के अन्तर्गत विशेष यज्ञ का आयोजन धर्माचार्य आचार्य रामकुमार जी ने सम्पन्न कराया तथा संगीत गीत भजन के द्वारा बच्चों के अपने गायन से सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया।आर्य समाज के द्वारा सभी बच्चों को पुरस्कृत किया गया तथा विवाह व जन्म दिवस के महानुभावों को आशीर्वाद प्रदान किया गया। यह भव्य विमोचन व सम्मान समारोह आनलाईन गूगल मीक आनलाईन भी देश भर में सैकड़ों आर्य जनों के द्वारा देखा गया। मंत्री अभिमन्यु जी ने सभी का आभार व्यक्त किया तथा संस्थापक फकीरे दयानंद श्रीयुत एस पी कुमार साहब ने स्पष्ट किया कि स्वामी रामभद्राचार्य जी द्वारा महर्षि दयानंद सरस्वती पर किये आक्षेप पर आर्यसमाज मारतहल्ली बंगलौर के द्वारा सर्वोच्च न्यायालय के वरिष्ठ अधिवक्ता विमल बधावन द्वारा कानूनी नोटिस भेजा गया है उसका विधिवत उत्तर न मिलने पर मुकदमा दायर किया जायेगा।शान्ति शान्ति पाठ जयघोष के द्वारा सी आगंतुक महानुभावों का अभिनंदन किया गया।

आर्य समाज सीतापुर की अंतरंग में श्रीराम भद्राचार्य के कथन की निन्दा भद्राचार्य गलती स्वीकार कर पश्चाताप करें

आर्य समाज सीतापुर की अन्तरंग सभा की बैठक दिनांक २८-७-२०२४ में तथाकथित स्वामी राम भद्राचार्य के द्वारा महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती के सन्दर्भ में साजिशन की गयी अभद्र व मिथ्या टिप्पणी पर गहरा रोष व्यक्त किया गया। प्रधान/उप प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र., चौधरी रणवीर सिंह ने बताया कि भद्राचार्य ने कहा है कि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने बहुत सी भूलें की हैं लेकिन एक भूल तो उन्होंने बहुत बड़ी कर दी है जिससे समाज की बहुत हानि हो गई है , वे रामायण और महाभारत को कल्पित मानते हैं। राम और कृष्ण के अस्तित्व को स्वीकार नहीं करते हैं और वेदों में इनका कोई भी प्रमाण नहीं होना मानते हैं। जबकि मैं (राम भद्राचार्य) यह सिद्ध कर सकता हूँ कि वेदों के प्रत्येक मन्त्र में राम कथा के बीज हैं। पाणिनि अष्टाध्यायी के प्रारंभ के १४ सूक्त में तो राम का ही इतिहास है और वे पाणिनि अष्टाध्यायी के आधार पर पाणिनीय रामायण सुनाने के लिए प्रतिबद्ध हैं।

भद्राचार्य का इस तरह का अनर्गल प्रलाप या तो कोई गम्भीर साजिश है या वे पागल हो गए हैं ।स्वामी दयानन्द सरस्वती ने राम को मर्यादा पुरुषोत्तम और कृष्ण को आप्त पुरुष बताया है । अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में कई स्थानों पर इन दोनों महापुरुषों के चरित्र को वरण करने का सन्देश दिया है। पाणिनि अष्टाध्यायी संस्कृत के व्याकरण का ग्रन्थ है। उसमें राम कथा कहाँ से आ जाएगी। इसी प्रकार वेदों का उत्पत्ति समय सृष्टि की उत्पत्ति के साथ है उनमें राम व कृष्ण का इतिहास कैसे हो सकता है क्योंकि राम व कृष्ण तो करोड़ों वर्ष बाद पैदा हुए। भद्राचार्य का यह वक्तव्य यह सिद्ध करता है कि भद्राचार्य को वेदों का कोई ज्ञान है ही नहीं क्योंकि वेदों में तो किसी का भी इतिहास नहीं है। उनमें तो भक्ति, कर्म, संगीत, ज्ञान-विज्ञान आदि विषयों के द्वारा मानव के सर्वांगीण विकास का मार्ग बताया गया है, वेद अपौरुषेय हैं उनमें किसी भी व्यक्ति या स्थान का कोई वर्णन नहीं है । सर्व सम्मति से भद्राचार्य के इस मिथ्या अनर्गल प्रलाप की कठोर शब्दों में घोर निंदा की गयी तथा निर्णय लिया गया कि भद्राचार्य अपने इस मिथ्या अनर्गल प्रलाप पर सार्वजनिक रुप से पश्चाताप करें, क्षमा याचना करें और सत्य के मार्ग पर चलने का संकल्प लें। वरना आर्य समाज उनके विरुद्ध विधिक प्रक्रिया के अन्तर्गत कानूनी कार्रवाई व जन आन्दोलन करने को बाध्य होगा।

पृष्ठ....७ का शेष

वेगवाला है । आँखों से रहित होकर भी देखता है, और कानों से रहित होकर भी सुनता है । वह प्रत्येक जानने योग्य वस्तु को जानता है, परंतु उसका अंत जानने वाला अन्य कोई नहीं है । उसे ज्ञानीजन महान, श्रेष्ठ आदि कहते हैं।

सर्वतः पाणिपादं तत् सर्वतोऽक्षिशिरोमुखम् ।
सर्वतः श्रुतिमल्लोके सर्वमावृत्य तिष्ठति ।

(श्वेताश्वतरोपनिषद ३/१६)

वह सब जगह हाथ-पैर वाला अर्थात सब ओर गति वाला है। सब जगह आँख वाला अर्थात सब ओर देखने वाला है। सर्वत्र सिर और मुख वाला अर्थात सब कुछ जानने वाला है । और सब जगह कानों वाला अर्थात सर्वत्र सुनने वाला है । वही लोक में सबको व्याप्त करके स्थित है।

न तस्य कश्चित् पतिरस्ति लोके न चेशिता नैव च तस्य लिङ्गम्।
स कारणं करणाधिपाधिपो न चास्य कश्चिज्जनिता न चाधिपः।।

(श्वेताश्वतरोपनिषद ६/९)

इस जगत में कोई उस परमात्मा का स्वामी नहीं है, उसका कोई शासक नहीं है एवं उसका कोई लिंग/चिह्न भी नहीं है। वह जगत् का निमित्त-कारण है अर्थात संसार को बनाने वाला है। वह इन्द्रियों के अधिष्ठाता जीवों का अधिपति है । उसका न कोई उत्पत्तिकर्ता है, न कोई अधिपति।

तिलेषु तैलं दधिनीव सर्पिरापः स्रोतःस्वरणीषु चाग्निः।
एवमात्माऽत्मनि गृह्यतेऽसौ सत्येनैनं तपसा योऽनुपश्यति।।

(श्वेताश्वतरोपनिषद १/१५)

जिस प्रकार तिलों में तैल, दही में घी, स्रोतों में जल और अरणियों में अग्नि क्रमशः पेरने, बिलोने, खोदने और रगड़ने से प्राप्त होते हैं, उसी प्रकार जो सत्य और तप के द्वारा परमात्मा को ध्यान-दृष्टि से देखता है, वह आत्मा में ही परमात्मा को प्राप्त करता है।

नित्यो नित्यानां चेतनश्चेतनानां एको बहूनां यो विदधाति कामान्।
तत्कारणं सांख्ययोगाधिगम्यं ज्ञात्वा देवं मुच्यते सर्वपाशैः।।

(श्वेताश्वतरोपनिषद ६/१३)

जो नित्यों का नित्य, चेतनों का चेतन अर्थात सर्वोपरि है, और एक अकेला ही सम्पूर्ण प्राणियों को उनके कर्मों का भोग प्रदान करता है, उस साँख्य एवं योग द्वारा अनुभूतिगम्य, सब जगत और शरीरों के कारणरूप/बनाने-वाले देव को जानकर, उपासक सम्पूर्ण पाशों/बन्धनों से मुक्त हो जाता है।

अणोरणीयान्महतो महीयानात्माऽस्य जन्तोर्निहितो गुहायाम्।
तमक्रतुः पश्यति वीतशोको धातुप्रसादान्महिमानमात्मनः ।।

(कठोपनिषद १/२/२०)

अणु से भी अणु और महान से भी महान परमात्मा, जीव की हृदय-गुहा में स्थित है। निष्काम और शोकरहित साधक, परब्रह्म के प्रसाद/कृपा से ही, उस परमात्मा की महिमा को देखता है। (साभार-सोशल मीडिया)

स्वामी–आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश सम्पादक–पंकज जायसवाल भगवानदीन आर्य भाष्कर प्रेस,
5–मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थायी रूप में शुभम् आफ्सेट प्रिंटर्स, कैसरबाग, लखनऊ से मुद्रित एवं प्रकाशित
लेखों में वर्णित भाषा या भाव से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है–सम्पूर्ण विवादों का न्याय क्षेत्र लखनऊ न्यायालय होगा।